पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2017-19

ओ३म्

शृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

# आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-१६, अंकः-१०, अप्रैल, सन्-२०१७, सं०-२०७३ वि०, दयानंदाब्द १९३, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११८; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

नवसंवत्सर पर विशेष

## १,९६,०८,५३,११८ वर्ष पूर्व बनी थी वर्तमान सृष्टि !

### स्वामी दयानन्द ने दिए 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में अकाट्य तर्क

#### अनेकानेक मत-पंथों ने किया अनुमोदन और अनुसरण

वर्तमान सृष्टि को बने हुए कितने वर्ष व्यतीत हो चुके हैं, -इस प्रश्न का उत्तर तलाशने में संलग्न विश्व के तमाम चिन्तकों और विचारकों की अटकलों को विराम देते हुए वर्तमान सृष्टि संवत् का निर्धारण जिस अमर ग्रन्थ के माध्यम से हुआ उसका नाम है-'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका'। 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' से महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा वेदभाष्य का अनुष्ठान प्रारंभ हुआ- मानों नवयुग का प्रभात आया, नव जागरण की बेला आई और मानव ने निद्रा का परित्याग कर जागृति की अँगड़ाई ली। रूढ़िवादियों द्वारा शताब्दियों से वेदों पर जो ताले जड़ दिये गये थे; उसकी जो कुंजी महर्षि दयानन्द ने तैयार की; उसी का नाम है-'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका'। जैसा कि योगिराज श्रीअरविन्द ने अपनी लेखमाला में वर्णन किया है। यही वह ग्रन्थ है जिसके बलबूते काशी हिन्दू विश्व विद्यालय की वेद कक्षा में- देवी सरस्वती को प्रवेश देने हेतु विवश होना पड़ा था और 'स्त्री शूद्रोनाधीयताम्' कहने वाले दुरभिमानियों को मुँह की खानी पड़ी थी। उस समय काशी हिन्दू वि.वि. के कुलपति भू.पू.राष्ट्रपति डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन थे।

'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' के 'वेदोत्पत्ति विषय' शीर्षक अध्याय में महर्षि ने विक्रम संवत् १९३३ फाल्गुन मास, कृष्णपक्ष षष्ठी, शनिवार चतुर्थ प्रहर के आरम्भ में यह घोषणा की थी-वर्तमान सृष्टि को १,९६,०८,५२,९७६ अर्थात् एक अरब छानवे करोड़ आठ लाख बावन हजार नौ सौ छिहत्तर वर्ष व्यतीत हुए हैं। महर्षि की इस घोषणा को आज १४१ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं अतः आज का सृष्टि संवत् है-१,९६,०८,५३,११८ (एक अरब छियानबे करोड़, आठ लाख तिरपन हजार एक सौ अठारह)। यह सृष्टि संवत् पूर्ण, शुद्ध तथा अकाट्य है। इस संवत् में किसी प्रकार का परिवर्तन संशोधन या परिवर्द्धन नहीं किया जा सकता है। विद्वत्समाज को यह बात गाँठ बाँध लेनी चाहिए।

'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में महर्षि के शब्दों को ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए-

"जैसे बहीखाते में मिती डालते हैं वैसे ही महीना और वर्ष बढ़ाते घटाते चले जाते हैं। इसी प्रकार आर्य्य लोग तिथिपत्र में भी वर्ष, मास और दिन आदि लिखते चले आते हैं। और यही इतिहास आज पर्य्यन्त सब आर्यावर्त्त देश में एकसा वर्तमान हो रहा है और सब पुस्तकों में भी इस विषय में एक ही प्रकार का लेख पाया जाता है, किसी प्रकार का इस विषय में विरोध नहीं है। इसीलिये इसको अन्यथा करने में किसी का सामर्थ्य नहीं हो सकता।"

सृष्टि संवत् निर्धारण में कालगणना करते समय दयानन्द की उस मेधा का हम साक्षात्कार करते हैं; जिसके कारण उन्हें ऋषि की उपाधि सहज ही प्राप्त हुई है। 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' के 'वेदोत्पत्ति विषय' अध्याय से हम इस प्रकरण को ज्यों का त्यों उद्धृत करते हैं-

"यह जो वर्तमान सृष्टि है, इसमें सातवें (७) वैवस्वत मनु का वर्त्तमान है, इससे पूर्व छः मन्वन्तर हो चुके हैं। स्वायम्भव १, स्वारोचिष २, औत्तमि ३, तामस ४, रैवत ५, चाक्षुष ६, ये छः तो बीत गये हैं और ७ सातवां वैवस्तव वर्त्त रहा है, और सावर्णि आदि ७ सात मन्वन्तर आगे भोगेंगे। ये सब मिलके १४ चौदह मन्वन्तर होते हैं। और एकहत्तर चतुर्युगियों का नाम मन्वन्तर धरा गया है। सो उसकी गणना इस प्रकार से है कि (१७,२८,०००) सत्रह लाख, अट्ठाइस हजार वर्षों का नाम सतयुग रक्खा। (१२,९६,०००) बारह लाख छानवे हजार वर्षों का नाम त्रेता, (८,६४,०००) आठ लाख चौंसठ हजार वर्षों का नाम द्वापर और (४३,२०,०००) तेंतालीस लाख बीस हजार का नाम कलियुग रक्खा है तथा आर्यों ने एक क्षण और निमेष से लेके एक वर्ष पर्यन्त भी काल की सूक्ष्म और स्थूल संज्ञा बांधी है। और इन चारों युगों के (४३,२०,०००) तितालीस लाख बीस हजार वर्ष होते हैं, जिनका चतुर्युगी नाम है। एकहत्तर (७१) चतुर्युगियों के अर्थात (३०,६७,२०,०००) तीस करोड़, सरसठ लाख, बीस हजार वर्षों की एक मन्वन्तर संज्ञा की है और ऐसे ऐसे छः मन्वन्तर मिलकर अर्थात् (१,८४,०३,२०,०००) एक

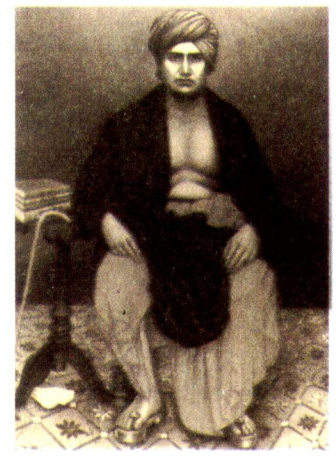

अर्ब, चौरासी करोड़, तीन लाख, बीस हजार वर्ष हुए, और सातवें मन्वन्तर के भोग में यह (२८) अट्ठाइसवीं चतुर्युगी है। इस चतुर्युगी में कलियुग के (४,९७६) चार हजार नौ सौ छिहत्तर वर्षों का तो भोग हो चुका है और बाकी (४,२७,०२४) चार लाख सत्ताईस हजार चौबीस वर्षों का भोग होने वाला है। जानना चाहिये कि (१२,०५,३२,९७६) बारह करोड़ पांच लाख बत्तीस हजार नौ सौ छिहत्तर वर्ष तो वैवस्वतमनु के भोग चुके हैं और (१८,६१,८७,०२४) अठारह करोड़, एकसठ लाख सतासी हजार चौबीस वर्ष भोगने के बाकी हैं। इनमें से यह वर्तमान वर्ष (७७) सतहत्तरवां है, जिसको आर्य लोग विक्रम का (१९३३) उन्नीस सौ तेतीसवां संवत् कहते हैं।"

महर्षि की इस गणना को सर्वजन सुलभ और ग्राह्य बनाने हेतु कई आर्य समाजों ने सुंदर कार्य किया है; जो उनकी बुद्धिमत्ता और महर्षि की मान्यताओं के प्रति श्रद्धा भक्ति का परिचायक है। उदाहरणार्थ- आर्य समाज संडीला जनपद हरदोई उ.प्र. में- प्रति वर्ष नवीन संवत्सर के स्वागत में शुभ कामना संदेश पत्रक वितरित किया जाता है उसमें नव वर्ष गणना का विवरण होता है।

सृष्टि संवत् सम्बन्धी महर्षि की मान्यता का अनुमोदन एवं अनुसरण अन्य मतों-पंथों, पंचांगों में भी किया जा रहा है। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के प्रकाशित होने पर कालूराम शास्त्री, ज्वाला प्रसाद मिश्र प्रभृति कई पौराणिक विद्वानों ने अपने आक्षेप प्रस्तुत किये किन्तु स्वामी श्रद्धानन्द सहित अनेक वैदिक विद्वानों ने उन्हें शास्त्रार्थ तथा वाद- प्रतिवाद द्वारा निरुत्तर कर दिया। अब जब हर जगह महर्षि द्वारा प्रतिपादित उपर्युक्त महर्षि के सृष्टि संवत् को मान्यता मिल रही है। जिन पौराणिक मान्यताओं को महर्षि ने अप्रामाणिक मानकर छोड़ दिया था, आज उन्हीं मान्यताओं को लेकर कोई विद्वान् यदि महर्षि द्वारा प्रवर्तित एवं मान्य सृष्टि संवत् को संशोधित या परिवर्द्धित करना चाहता है, तो यह उसका दुराग्रह ही कहा जायगा। कोई विद्वान् कितना ही पढ़लिखा क्यों न हो; महर्षि जैसा सत्यान्वेषी, पारंगत एवं निर्भ्रान्त नहीं हो सकता है। अतः वैदिक विद्वानों का कर्त्तव्य है कि वे कालूराम शास्त्री की भूमिका में स्वयं को प्रस्तुत करने से परहेज करें- साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों का दायित्व है कि अपने मान्य आचार्य दयानन्द की मान्यताओं पर दृढ़ रहें। किसी अन्य से प्रभावित न हों। इस वर्ष एक आर्य समाज ने तो महर्षि द्वारा प्रतिपादित सृष्टि संवत् में वह कालखण्ड जोड़ने का दुःसाहस किया- जो अभी व्यतीत होना बाकी है!

'आर्य लोक वार्ता' पहले भी समय समय पर आर्य जनता को सचेत करता रहा है कि महर्षि के सिद्धान्त और मान्यताएँ अपने आप में परिपूर्ण और

(शेष पृष्ठ ३ पर.....)

(१) छः मन्वन्तर-४३,२०,०००x७१x६
=१,८४,०३,२०,०००वर्ष
(२) वैवस्वत २७ चतु.-४३,२०,०००x२७
=११,६६,४०,०००वर्ष
(३) २८वीं चतुर्युगी का ५,११८वाँ वर्ष
(सतयुग-१७,२८,०००,
त्रेता-१२,९६,०००, द्वापर-८,६४,०००,
कलयुग-५,११८) =३८,६३,११८वर्ष
कुल वर्ष =१,९६,०८,५३,११८
*(आर्य समाज, संडीला, हरदोई)*

### विनय पीयूष

### प्यार ! तुम्हारा साथ न छूटे !

यो विश्वतः सुप्रतीकः सदृङ्ङसि दूरे चित्सन्तळिदिवाति रोचसे।
रात्र्याश्चिदन्धो अति देव पश्यस्यग्ने सख्ये मा रिषामां वयं तव।।
*(ऋ. : 1/94/7)*

प्यार ! तुम्हारा साथ न छूटे !

तुम बिजुरी, जग
घन अँधियारा।
तुम राही का
एक सहारा।

तुम आशा, तुम
ही अभिलाषा।
तुम शिव-सुन्दर
की परिभाषा।

तुमसे जीवन-पथ आलोकित,
इस उजास की धार न टूटे।

*काव्यानुवाद : अमृत खरे*

## सम्पादकीय

# मोदी की उ.प्र. को अनुपम देन है 'योगी'

प्रसिद्ध है कि लगभग एक हजार वर्ष पूर्व जब योगी मत्स्येन्द्र नाथ हताशा के अंधकूप में पड़े हुए थे; तो अचानक उन्हें आवाज सुनाई दी- 'जाग मछन्दर, गोरख आया'। मत्स्येन्द्र नाथ अंधकूप से बाहर निकले तो सामने योगी गोरखनाथ को खड़ा पाया। मत्स्येन्द्र नाथ को निराशा के कुएँ से बाहर निकालने का श्रेय योगी गोरखनाथ को दिया जाता है; इसी तरह उत्तर प्रदेश जब भ्रष्टाचार, व्यभिचार, बलात्कार, गुंडागर्दी, माफियागीरी से तंग आकर निश्चेष्ट हो रहा था, निराशा के गहरे खड्ड में पड़ा हुआ था; तो उसे आशा-विश्वास के प्रांगण में लाकर खड़ा करने का श्रेय योगी आदित्यनाथ को है। आज योगी आदित्यनाथ जब कहते हैं, एक भी माफिया, गुंडा, बलात्कारी, भ्रष्टाचारी और व्यभिचारी उत्तर प्रदेश में नहीं रहने पायेगा, यह मेरी प्रतिज्ञा है; तो लाखों वर्ष पूर्व मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम द्वारा की गई यह घोषणा याद आ जाती है-

निसिचर हीन करौं महि, भुज उठाइ प्रन कीन्ह।

आधुनिक युग में स्वतंत्रता संग्राम के संघर्षों तथा उसके पश्चात् गोरखपुर के प्रसद्धि गोरखनाथ मंदिर के महन्तों- विशेषकर स्मृतिशेष महन्त दिग्विजयनाथ तथा महंत अवैद्यनाथ ने इस मंदिर को साधना-उपासना से कहीं बढ़कर लोकरक्षक, दीनरक्षक और धर्मरक्षक की महिमा से मंडित किया। विगत शताब्दियों में गोरखपुर क्षेत्र देशद्रोहियों और विधर्मियों की घातक गतिविधियों का गढ़ बन गया था। विशेष रूप में उनकी निर्धनता का फायदा उठाकर बलात् धर्म परिवर्तन करके दोजख में ढकेलने का कार्य बड़े पैमाने पर होता रहता था। इस अवैध व्यापार की रोकथाम का कोई कार्यक्रम गफलत की नींद में सोई जनता के पास नहीं था। अंधविश्वास की मारी हुई जनता अपने परिवार की बच्चियों को विधर्मियों के हाथों सौंप रही थी। आर्य समाजों में अवश्य ही शुद्धि का शंख बज रहा था किन्तु उसको भी सशक्त प्राणवायु की आवश्यकता थी। यह प्राणवायु गोरखनाथ मंदिर तथा उसके महंतों द्वारा मिलने लगी; तो पीड़ित हिन्दू जनता ने राहत की साँस ली। सैकड़ों की संख्या में भूले भटके हुए लोग वैदिक हिन्दू धर्म की शरण में वापस आ गये और मूलधारा से बिछुड़ने का प्रोग्राम रुक गया था। यह चमत्कार गोरखनाथ मंदिर के महन्तों का ही था। उन दिनों अनेक आर्य समाजी प्रचारक भजनोपदेशक बाबा गोरखनाथ के प्रांगण में आश्रय पाते थे और आर्य समाज गोरखपुर के वार्षिकोत्सव जो अपनी बृहद् उपस्थिति के लिए विख्यात रहे हैं, गोरखनाथ मंदिर के महन्त किसी न किसी दिन अवश्य ही आते थे और अपना सहयोग तथा आशीष प्रदान करते थे। विगत शताब्दी के छठे दशक में तो मैं स्वयं अनेक बार आर्य समाज बख्शीपुर और आर्य समाज साहबगंज के वार्षिक उत्सवों में जाता रहा और इस दृश्य का साक्षी बना।

योगी आदित्यनाथ भी उसी समृद्ध परम्परा की देन हैं। योगी आदित्यनाथ दर्शन के ज्ञाता हैं, साथ ही वे आर्य सामाजिक विचारधारा के भी अध्येता हैं। 'सत्यार्थ प्रकाश' का उन्होंने स्वाध्याय किया है और अन्य मतावलम्बियों को भी सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय की प्रेरणा देते रहते हैं क्योंकि 'सत्यार्थ प्रकाश' के स्वाध्याय से व्यक्ति की अन्य मत-मतान्तरों पर पकड़ मजबूत होती है और वह लोगों को निरुत्तर कर देता है तथा स्वयं कभी निरुत्तर नहीं होता। अतः २६ मार्च २०१७ को योगऋषि रामदेव जी के योग-महोत्सव में जब योगी आदित्यनाथ ने नमाज और सूर्यनमस्कार के साम्यत्व को समझाया; तो वह एक सुविचारित योगी का अकाट्य कथन था। किसी सामान्य राजनीतिक व्यक्ति का नहीं। इसका अनेक मुस्लिम राष्ट्रवादी बन्धुओं और देवियों पर अनुकूल प्रभाव देखा गया।

जिस समय अयोध्या में योगी दयानन्द के वेदभाष्य के स्मारक निर्माण हेतु भूमिक्रय का अनुबंध हो रहा था, उन्हीं दिनों उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री पद पर योगी आदित्य नाथ का राज्यारोहण हो रहा था। यह मात्र संयोग न होकर एक दैवी विधान है। योगी आदित्यनाथ और उन्नीसवीं सदी के योगी दयानन्द में क्या साम्य है- इसे समझ लेना चाहिए। योगी दयानन्द ने देश में पहली बार गोरक्षा का आन्दोलन खड़ा किया, हस्ताक्षर अभियान चलाया, गोकृष्णादिरक्षिणी सभा का संविधान बनाया तथा गोकरुणानिधि नामक पुस्तक की रचना की। गोरक्षा यदि योगी दयानन्द का प्रमुख कार्यक्रम था तो योगी आदित्यनाथ का साधनापीठ ही 'गोरक्षनाथ' है। वे गोरक्षपीठ के महन्त हैं और गोरक्षा के कितने हिमायती हैं, यह आज उत्तर प्रदेश की जनता अनुभव करने लगी है; जबकि उन्हें मुख्य मंत्री पद ग्रहण किये हुए एक माह ही हुआ है। आर्यजनता को विधर्मियों के चंगुल से मुक्त कराने हेतु योगी दयानन्द ने जिस शुद्धि आन्दोलन का प्रवर्तन किया था; योगी आदित्यनाथ ने अपने पूर्ववर्ती गुरुओं की भांति गोरखपुर केन्द्र में उसको गति प्रदान की है। समाज को संगठित और सचेष्ट करने में जो पराक्रम पुरुषार्थ प्रदर्शित किया है, वह युगान्तरकारी है। दयानन्द यदि बाल आदित्य ब्रह्मचारी थे तो योगी आदित्यनाथ विरक्त ब्रह्मचारी हैं। योगी आदित्यनाथ के भी आदि गुरु शिव हैं और योगी दयानन्द को भी शिवरात्रि में ही सच्चे शिव का बोध प्राप्त हुआ था। इतना ही नहीं आज जिस प्रधानमंत्री नरेन्द्र दामोदर मोदी ने उ.प्र. को योगी आदित्यनाथ का उपहार प्रदान किया है; वे जिस गुजरात प्रदेश की मिट्टी से उपजे हैं- उसी गुजरात प्रदेश के टंकारा को योगी दयानन्द की जन्मभूमि होने का गौरव प्राप्त है। ऐसी दशा में यदि योगी दयानन्द के वेदभाष्य का स्मारक सरयूबाग, अयोध्या में बनता है तो योगी आदित्यनाथ उस स्मारक की भव्यता में चार चाँद लगाने में पीछे नहीं रहेंगे क्योंकि अयोध्या में वेदभाष्य स्मारक भारत के विश्वगुरु पद पर पुनः प्रतिष्ठित होने का माध्यम सिद्ध होगा-

सारा भारत बोलता, मोदी की जयकार।
जिसने यूपी को दिया, योगी का उपहार।

## सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१७४

**युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में अष्टम समुल्लास का अंश**

(प्रश्न) अनादि ईश्वर कोई नहीं किन्तु जो योगाभ्यास से अणिमादि ऐश्वर्य को प्राप्त होकर सर्वज्ञादि गुणयुक्त केवल ज्ञानी होता है वही जीव परमेश्वर कहलाता है।

(उत्तर) जो अनादि ईश्वर जगत् का सृष्टा न हो तो साधनों से सिद्ध होने वाले जीवों का आधार जीवनरूप जगत्, शरीर और इन्द्रियों के गोलक कैसे बनते? इनके बिना जीव साधन नहीं कर सकता। जब साधन न होते हो सिद्ध कहाँ से होता?

जीव चाहै जैसा साधन कर सिद्ध होवे तो भी ईश्वर को जो स्वयं सनातन अनादि सिद्धि है; जिसमें अनन्त सिद्धि हैं; उसके तुल्य कोई भी जीव नहीं हो सकता। क्योंकि जीवन का परम अवधि तक ज्ञान बढ़े तो भी परिमित ज्ञान और सामर्थ्य वाला होता है। अनन्त ज्ञान और सामर्थ्य वाला कभी नहीं हो सकता।

देखो! कोई भी आज तक ईश्वरकृत सृष्टिक्रम को बदलनेहारा नहीं हुआ है और न होगा। जैसा अनादि सिद्ध परमेश्वर ने नेत्र से देखने और कानों से सुनने का निबन्ध किया है इसको कोई भी योगी बदल नहीं सकता। जीव ईश्वर कभी नहीं हो सकता।

(प्रश्न) कल्प कल्पान्तर में ईश्वर सृष्टि विलक्षण-विलक्षण बनाता है अथवा एक सी?

### शास्त्र-अविरोध

(उत्तर) जैसी कि अब है वैसी पहले थी और आगे होगी; भेद नहीं करता।

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।।

ऋ/10/191/3

(धाता) परमेश्वर जैसे पूर्व कल्प में सूर्य, चन्द्र, विद्युत्, पृथिवी, अन्तरिक्ष आदि बनाता था। वैसे ही अब बनाये हैं और आगे भी वैसे ही बनावेगा।। इसलिये परमेश्वर के काम बिना भूल चूक के होने से सदा एक से ही हुआ करते हैं। जो अल्पज्ञ और जिसका ज्ञान वृद्धि क्षय को प्राप्त होता है उसी के काम में भूल चूक होती है; ईश्वर के काम में नहीं।

(प्रश्न) सृष्टि विषय में वेदादि शास्त्रों का अविरोध है वा विरोध?

(उत्तर) अविरोध है।

(प्रश्न) जो अविरोध है तो-

तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः। आकाशाद्वायुः। वायोरग्निः। अग्नेरापः। अद्भ्यः पृथिवी। पृथिव्या ओषधयः। ओषधिभ्योऽन्नम्। अन्नाद्रेतः। रेतसः पुरुषः। स वा एष पुरुषोऽन्नरसमयः

यह तैत्तिरीय उपनिषद् का वचन है- उस परमेश्वर और प्रकृति से आकाश अवकाश अर्थात् जो कारणरूप द्रव्य सर्वत्र फैल रहा था उसको इकट्ठा करने से अवकाश उत्पन्न सा होता है। वास्तव में आकाश की उत्पत्ति नहीं होती क्योंकि बिना आकाश के प्रकृति और परमाणु कहाँ ठहर सके?

(क्रमशः)

## वेद प्रवचन

# प्रभु देवों का देव है

प.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

**देवो देवानामसि मित्रो अद्भुतो वसुर्वसूनामसि चारुरध्वरे।**
**शर्मन्त्स्याम तव सप्रथस्तमेऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव।।**

(ऋ. : 1/94/13)

**शब्दार्थ-**

हे (**अग्ने**) हे प्रकाशस्वरूप! (**देवानाम्**) देवों का (**देवः**) देव (**असि**) है। (**अद्भुतः**) विचित्र (**मित्रः**) मित्र (**वसूनां वसुः**) धनों का धन (**असि**) है। (**अध्वरे चारुः**) यज्ञ में तू सुशोभित है। (**वयम्**) हम (**तव**) तेरी (**सप्रथस्तमे शर्मन्**) अति विस्तृत शरण में (**स्याम**) हों और (**तव सख्ये**) तेरी मित्रता में (**मा रिषाम**) हम नष्ट न होवें।

**व्याख्या-**

वह प्रभु प्रकाशस्वरूप है। संसार में भौतिक और ज्ञान का प्रकाश उसी की कृपा से हमें प्राप्त है। उसने यदि अपने प्रकाश की व्यवस्था न की होती तो हम आँखें रहते हुए भी अन्धे रहते। हमारी आँखें उसी के प्रकाश की सहायता से देखती हैं। दिन में सूर्य के प्रकाश में और रात्रि को दीपक, विद्युत् आदि, अर्थात् अग्नि की सहायता से हम देख पाते हैं। यदि प्रकाश का यह प्रबन्ध न होता तो हम अन्ध-समान होते। जैसे हमारी आँखों के लिए उसने भौतिक प्रकाश का प्रबन्ध किया, इसी प्रकार हमारी बुद्धिरूपी आँख से देखने के लिए, जानने के लिए, अपने पवित्र ज्ञान का प्रकाश वेदों के रूप में ऋषियों के अन्तःकरण में किया। यदि उसने अपने इस ज्ञान के प्रकाश से हमें अनुगृहीत न किया होता तो हमारी अवस्था पशु और पक्षियों से भी बुरी होती। न कोई हमारी भाषा होती और न कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का ही कुछ विवेक होता। अतः वह प्रकाशस्वरूप है। वह प्रभु देवों का देव है। जड़ और चेतन देव उसी से दिव्यता लेकर संसार का उपकार कर रहे हैं। सूर्य में प्रकाश और उष्णता, चन्द्रमा में वही प्रकाश शीतलता युक्त, अग्नि में दाहकता, वायु में वेग और शोषणशक्ति, इन सब जड़ देवों में यह दिव्यता उसी महान् देव की देन है। मन्त्र में पहली बात कही- **'देवो देवानामसि'**-तू देवों का देव है। इसके आगे कहा-**'अद्भुतः मित्रः'**-आप विचित्र मित्र हैं। आपकी मित्रता में जो विशेषता है, वह संसार में उपलब्ध नहीं है। संसार में मनुष्य किसी का मित्र होता है, किसी से उदासीन रहता है और किसी का शत्रु भी होता है। कोई भी व्यक्ति कितना भी ऊँचा क्यों न उठ जावे, किन्तु वह सबका मित्र नहीं हो सकता। वह सब मनुष्यों को और प्राणि मात्र को अपनी ओर से मित्र समझ सकता है, किन्तु वे सब भी उसे अपना मित्र समझें यह सम्भव नहीं है। संस्कृत के किसी कवि ने इस विषय में बहुत महत्त्वपूर्ण बात कही है-

**मुनेरपि वनस्थस्य स्वानि कर्माणि कुर्वतः। उत्पद्यन्ते त्रयः पक्षा मित्रोदासीनशत्रवः।।**

'एक साधु भी जो जंगल में झोंपड़ी बनाकर स्वाध्याय और भजन में संलग्न रहता है, संसार में कुछ लोग उसके पवित्र जीवन में श्रद्धालु बनकर उससे मित्रभाव से बरतते हैं, कुछ लोग उससे उदासीन रहते हैं और कुछ अकारण उसके शत्रु बन जाते हैं।' यह संसार का स्वरूप है। किन्तु प्रभु तो सभी का मित्र है, इसीलिए वह अद्भुत है। संसार में लोग अपने स्वार्थ को देखकर भी मित्रता जोड़ते हैं, पर प्रभु के लिए यह भी नहीं है, इसलिए वह अद्भुत है। सांसारिक मित्रता के लिए एक स्तर भी अपेक्षित है; किसी लखपति की किसी अकिंचन से मित्रता नहीं होती, पर भगवान् का स्नेहपात्र बनने के लिए हृदय की सात्विकता और पवित्रता की आवश्यकता है, किसी बाह्याडम्बर की नहीं। इन सब कारणों से वह अद्भुत मित्र है।

मन्त्र में तीसरा विशेषण है-**'वसुर् वसूनामसि'**-वह प्रभु धनों का धन है। वसु का शब्दार्थ है बसानेवाला। यदि हृदय में पवित्रता और सात्त्विकता न हो तो दुनियावी पैसा भी बसाता नहीं, उजाड़ता है; अनेक प्रकार के व्यसन पैसेवालों को लग जाते हैं, जो मन को अशान्त और शरीर को श्रान्त कर देते हैं। किन्तु तुम्हारी भक्ति का ऐश्वर्य वह ऐश्वर्य है कि जिसे पाने के लिए तेरे भक्त साम्राज्य ठुकराकर और महलों को त्यागकर जंगलों में जा पड़ते हैं, इसलिए सच्चा और तृप्तिकारक धन आपकी भक्ति का ही धन है। यज्ञादि धार्मिक कार्यों की पवित्रता और शोभा भी प्रभु के कारण है। जहाँ आप नहीं, वे धर्म दम्भ और ढोंग बन जाते हैं, उस अवस्था में उनसे उत्थान न होकर पतन होता है। **'तव सप्रथस्तमे'**-तेरी विस्तृत विश्वव्यापिनी छत्रछाया में, तेरे संरक्षण में **'शर्मन् स्यामे'**-सुखी रहें। **'तव सख्ये मा रिषाम'**-तेरी मित्रता में नष्ट न हों। प्रभु के मित्र बनने पर विनाश कैसा? संसार में भी विद्वानों के मित्र उनकी संगति में रहकर अज्ञानता से पीछा छुड़ाकर बहुज्ञ और बहुश्रुत बन जाते हैं। बलवानों के मित्र शत्रुओं से निर्भय हो जाते हैं और इसी प्रकार श्रीसम्पन्नों के मित्र अपनी दरिद्रता से पीछा छुड़ा लेते हैं। फिर आप जैसे मित्र को पाकर जो ज्ञानबल और ऐश्वर्य का भण्डार है, तेरा भक्त नष्ट कैसे हो सकता है?

आप इतनी ही कृपा करें कि हम सुपथ पर चलकर शुभकर्म करते हुए आपके स्नेह के पात्र बने रहें।

("श्रुति सौरभ' से साभार)

# दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-६७

समृद्धिश्चैश्वर्यं यतनपुरुषार्थैर्विरहितं
परिप्राप्तं पूर्वैरभवदभिशापं च पतनम्।
तदादत्तुं लोभादपरिमितसेनाऽपतदिह
मुसल्मानानां सा प्रलय इव संहारनिरता।।

पुरुषार्थ के बिना प्राप्त किया
ऐश्वर्य और समृद्धि
सदैव पतन के कारण बनते हैं
तथा विशेष रूप से वह वैभव
जो पूर्वजों से प्राप्त हुआ हो।
उसी वैभव को लूटने के लिए
विदेशियों की सेना के
टिड्डी दल भारत की ओर
चल पड़े।
उनमें मुसलमानों की सेनायें
प्रलय के समान विनाशकारी थीं!!

*('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)*

## वायलिन के जादूगर
## गोपाल चन्द्र नन्दी

वायलिन के जादूगर गोपाल चन्द्र नन्दी से आर्य लोक वार्ता के पाठक पूर्व परिचित हैं। नन्दी जी भी 'आर्य लोक वार्ता' के पाठक और प्रशंसक हैं। भातखण्डे संगीत महाविद्यालय में संगीत के प्रोफेसर रहे नन्दी ने अनेक विख्यात संगीत-सम्मेलनों में अपने वायलिन-वादन से रसिकों को सम्मोहित किया है।

गोपाल चन्द्र नन्दी का जन्म इलाहाबाद के एक प्रसिद्ध और पारम्परिक संगीतज्ञ परिवार में 1939 को हुआ। इनमें संगीत के प्रति गहरा लगाव और समझ बचपन से ही थी। पिता श्री चारु चन्द्र नन्दी ने हिन्दुस्तानी शैली के वायलिन-वादन की गहन-शिक्षा बचपन में ही देनी शुरू कर दी थी। उन्होंने स्वयं वादन और गायन की शिक्षा समय-समय पर अनेक गुरुओं से प्राप्त की थी और संगीत-समाज में उनका ऊँचा स्थान था।

गोपाल चन्द्र नन्दी ने अंग्रेजी और वायलिन में एम.ए. की शिक्षा औपचारिक रूप से भी प्राप्त की। इन्होंने वायलिन-वादन को अपना मौलिक योगदान देते हुए अंगुलि-संचालन तथा गजकारी की नयी शैली को जन्म दिया। यह चार सप्तकों तक अवरोध-मुक्त प्रवाही वादन करते हुए गायकी और तंत्रकारी, दोनों शैलियों में मुग्धकारी संगीत प्रस्तुत करने में पारंगत हैं। राग-प्रस्तुति में ध्रुपद अंग अलापकारी के लिये आप एक अलग ही पहचान रखते हैं। आपका वाद्ययंत्र पर गज़ब का अधिकार है और मींड, सूत, गमक, बढ़त आदि में अद्भुत निपुणता प्राप्त है।

गोपाल चन्द्र नन्दी जी आकाशवाणी और दूरदर्शन के ए-ग्रेड वायलिन कलाकार हैं। आकाशवाणी, दूरदर्शन के साथ-साथ प्रतिष्ठित संगीत-समारोहों के लिये अपने अखिल-भारतीय स्तर पर अपनी वादन-कला का अनेक बार प्रदर्शन किया है। आपने अनेक वाद्यवृन्द-रचनाओं का सृजन किया है और ऑर्केस्ट्रा-संचालन किया है। आपके देशी-विदेशी शिष्य संसार भर में आपका नाम रोशन कर रहे हैं।

आपकी प्रतिभा और योगदान को सम्मानित करते हुए 'सुर सिंगार संसद (मुम्बई) ने आपको 'सुरमणि' पुरस्कार प्रदान किया है। 'भारतीय संगीत एवं ललित कला विद्यापीठ' (कानपुर) ने आपको 'संगीत-आचार्य' की उपाधि प्रदान की है। 'ब्रज संगीत विद्यापीठ' (मथुरा) ने आपको 'संगीत कला रत्न' से विभूषित किया है। 'संगीत भवन' (लखनऊ), 'भातखण्डे संगीत महाविद्यालय' (गाजियाबाद) आदि अनेक संस्थाओं ने आपको सम्मानित कर अपने को गौरवान्वित किया है।

'आर्य लोक वार्ता' परिवार वायलिन के जादूगर गोपाल चन्द्र नन्दी के दीर्घ और स्वस्थ जीवन के लिए शुभकामनाएँ देता है।

सम्प्रति नन्दी जी का पता है-

बी-20, हरी नगर, नारायण नगर, लखनऊ-226 016

*(आर्य लोक वार्ता फीचर डेस्क)*

*(पृष्ठ 1 का शेष.....)*

**वर्तमान सृष्ठि....**

अकाट्य हैं। आज भी परोपकारिणी सभा अजमेर, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 'दयानन्द संदेश' दिल्ली, 'आर्य जीवन' हैदराबाद, 'नूतन निष्काम' मुम्बई, अग्निदूत, छत्तीसगढ़, शान्तिधर्मी, जीन्द(हरियाणा), 'आर्यमित्र' लखनऊ, सत्यधर्म प्रचारक, जालंधर इत्यादि प्रायः सभी पत्र एवं संस्थायें महर्षि के सृष्टि संवत् को ही व्यवहार में ला रही हैं।

महर्षि दयानन्द को संशोधित करने का उपक्रम करते हुए अब भी विफल चेष्टा होती है। समस्त शंकाओं और दुराग्रहों का उत्तर आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली से प्रकाशित 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' की उपक्रमणिका में आचार्य राजवीर शास्त्री द्वारा दिया जा चुका है। एक बार पुनः आचार्य जी की शब्दावली को यहाँ प्रस्तुत करते हैं, तथा आशा करते हैं कि इन पंक्तियों को पढ़कर सृष्टि संवत् संबन्धी समस्त शंकाओं को समाधान मिल जायेगा-

"महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के 'वेदोत्पत्ति विषय' में सृष्टि संवत् के विषय में बहुत ही स्पष्ट तथा प्रमाण देकर यह सिद्ध किया है कि वेदोत्पत्ति तथा जगदुत्पत्ति का ऐतिहासिक संवत् एक अरब छानवें करोड़ आठ लाख बावन हजार नौ सौ छिहत्तर वर्ष (१,९६,०८,५२,९७६वर्ष) सं. १९३३ में बनता है।....हमारे ट्रस्ट ने सृष्टि संवत् विषय में दयानन्द संदेश का विशेषांक भी निकाला है, जिसका आर्य विद्वान् आज तक कोई उत्तर नहीं दे सके हैं। सृष्टि संवत् का विषय गणित का प्रश्न है। उसमें तो एक वर्ष का भी अन्तर नहीं आना चाहिए। परन्तु उसमें करोड़ों वर्षों का अन्तर मानकर उसी का व्यवहार करना कैसी विचित्र विडम्बना है?

अपनी मिथ्या-मान्यता को दुराग्रह वश सिद्ध करने के लिए कुछ विद्वानों ने पौराणिक-कल्पनाओं अर्थात् सन्धिकाल (जल-प्लव) आदि का आश्रय ही नही लिया है; अपितु श्री पं.युधिष्ठिर जी मीमांसक ने महर्षि के ग्रंथों में टिप्पणी देकर महर्षि की त्रुटि दिखाने का भी दुस्साहस किया है। महर्षि के समस्त ग्रन्थों में सृष्टि-संवत् विषय में सर्वत्र एकरूपता देखने को मिलती है। यदि कहीं गणना में त्रुटि रही होती तो अन्यत्र तो त्रुटि नहीं होनी चाहिए। क्या कोई विद्वान् उनकी गणना में एक अंक की भी भूल दिखा सकता है? कुछ विद्वान् इसे ज्योतिष का विषय कहकर पराङ्मुख हो जाते हैं। क्या ज्योतिष के विद्वान् समाप्त हो गए हैं? जो विषय का निर्णय नहीं कराया जा सकता। अपनी मान्यता की सिद्धि के लिए वे विद्वान् वर्तमान में उपलब्ध मयासुर रचित 'सूर्य सिद्धान्त' का आश्रय लेते हैं। हमने उस 'सूर्य सिद्धान्त' के भी परस्पर विरोध विद्वानों के समक्ष रक्खे हैं। जिनकी संगति लगाने में कोई भी विद्वान् समर्थ नहीं हो सका है। पौराणिक ज्योतिषियों ने तो अपने पत्रे पर ऋषि की मान्यता वाला संवत् लिखना आरम्भ भी कर दिया है। किन्तु हमारी शिरोमणि सभा अभी तक हठतावश मयासुर के मार्ग पर चल रही है। जिसमें स्वयं उसके ग्रंथ में परस्पर विरोध है तथा गणना के एवं अनेक प्रकार के सैद्धान्तिक दोष उत्पन्न होते हैं।

सृष्टि संवत् विषय में हमारी स्पष्ट मान्यता है कि महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट सृष्टि-संवत् सर्वथा शुद्ध है। और उसमें मनुस्मृति तथा ज्योतिष के ग्रन्थों से गणना में कोई विरोध नहीं है। विरोध है मिथ्या कल्पनाओं में है। हम इस विषय में विचार-विमर्श के लिए सर्वदा निष्पक्ष भाव से उद्यत हैं। इस विषय में दयानन्द-सन्देश का 'सृष्टि-संवत् विशेषांक' पढ़ना चाहिए। जिसमें इस विषय के विभिन्न पक्षों पर सयुक्तिक तथा सप्रमाण विचार किया गया है।" *(आर्य लोक वार्ता फीचर डेस्क)*

# वाचनालय से

'तीन तलाक पर बहस' में हिस्सा लेते हुए **'वैदिक-पथ'** मासिक (हिण्डौन सिटी) में 'सम्पादकीयम्' में ज्वलन्त कुमार शास्त्री लिखते हैं कि 1985 में उठे शाहबानो केस के 31 वर्ष बाद तीन तलाक पर बहस पुनः जोर-शोर से उठी है। हैरानी की बात है कि विपक्ष की अधिकांश पार्टियाँ मौजूदा सरकार की मुस्लिम महिलाओं के पक्ष में रखी गयी राय से सहमत नहीं हैं। कांग्रेस पार्टी इसे भाजपा की स्टण्टबाजी बता रही है। बसपा सुप्रीमो मायावती तीन तलाक की मान्यता को खत्म करने के लिये केन्द्रीय सरकार के प्रयास को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का एजेण्डा बता रही हैं। ममता बनर्जी ने इस मुद्दे पर ज़बान ही नहीं खोली है। महिलाओं की अस्मिता और समानाधिकार के मसले पर इन दोनों महिला-नेताओं का रूख स्पष्टतः महिला विरोधी है।....

ज्वलन्त शास्त्री लिखते हैं कि मधुलिमये ने अपने निधन से 4-5 वर्ष पूर्व यह लिखा था कि कट्टर मौलानाओं के विरोध की परवाह न करते हुए मुस्लिम महिलाओं के विवाह और तलाक सम्बन्धी अधिकार अन्य भारतीयों जैसा ही बनाने का सरकारी प्रयास होना चाहिए। तलाक का मसला विशुद्ध रूप से लैंगिक समानता का मसला है।....68 वर्ष पहले इसे निजी कानूनों के दायरे में माना गया और उस वक्त इसे इसलिये छेड़ने से बचा गया कि ऐसा करने से विभिन्न समुदायों की धार्मिक भावनाएँ आहत होंगी।....आज भी धार्मिक भावना आहत न हो, यही मुद्दा हावी है। यह एक ऐतिहासिक गलती है, जिसका खामियाजा 68 वर्ष से मुस्लिम महिलाओं को भुगतना पड़ रहा है।

'दयानन्द की प्रासंगिकता' को रेखांकित करता स्वामी अग्निवेश का लेख पाक्षिक **'आर्य जीवन'** (हैदराबाद) ने प्रकाशित किया है। स्वामी अग्निवेश लिखते हैं कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने विलक्षण व्यक्तित्व और कृतित्व से उन्नीसवीं सदी के पराधीन और जर्जरित भारत को गहराई तक झकझोरा था। उसका प्रभाव हम इक्कीसवी सदी में भी महसूस कर रहे हैं ओर उनके प्रेरणा पाकर उन सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक अंधविश्वासों से लोहा ले रहे हैं, जो दीमक बनकर समाज व धर्म को भीतर ही भीतर खोखला कर रहे हैं। सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक, आर्थिक, राजनीतिक, दार्शनिक और आध्यात्मिक जगत की व्याधियों, दुर्बलताओं और त्रुटियों का तलस्पर्शी अध्ययन उन्होंने किया था। रोग के अनुसार ही उन्होंने उपचार किया। तब तक ऐसा सर्वांगीण प्रयास किसी भी समकालीन सुधारक से न हो सका था।

स्वामी अग्निवेश लिखते हैं कि महर्षि दयानन्द का प्रयास मूलतः वेद पर आधारित था, जो अपने उद्भव काल से ही स्वप्रमाणित, चिरंतन और शाश्वत समझे जाते रहे हैं। दयानन्द जितने प्रासंगिक उन्नीसवीं शताब्दी में थे, उतने ही प्रासंगिक हर युगखण्ड में रहेंगे। कारण, विज्ञान और तकनीक चाहे जितनी उन्नति कर ले, मनुष्य की धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की भावभूमि वही रहेगी, जो अनादि काल से चली आ रही है और अनन्त काल तक चलती रहेगी। जीवन के इस क्रम, सत्य, तथ्य व लक्ष्य को न विज्ञान बदल सकता है ओर न ही तकनीक। महर्षि दर्शन हर युग के मानव को दिशा-बोध प्रदान करता रहेगा और हर युग के लिये वह प्रासंगिक बने रहेंगे।

साप्ताहिक **'आर्य संदेश'** (नई दिल्ली) में प्रकाशित लेख 'संत रविदास और इस्लाम' में डॉ.विवेक आर्य लिखते हैं कि मुस्लिम सुल्तान सिकन्दर लोधी भारत के हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की उधेड़ बुन में लगा रहता था। उसने संत रविदास को मुसलमान बनाने की जुगत में अपने मुल्लाओं को लगाया। वे मुल्ला संत रविदास से प्रभावित होकर उनके शिष्य बन गये। एक तो रामदास नाम रखकर हिन्दू हो गया। सिकन्दर लोधी चिढ़ गया। उसने संत रविदास को बन्दी बना लिया। चंवर वंशीय क्षत्रिय समाचार मिलते ही दिल्ली पर चढ़ दौड़े और दिल्ली की नाका बन्दी कर दी। विवश होकर लोदी को संत रविदास को छोड़ना पड़ा। संत रविदास जी महाराज की निम्न पंक्तियाँ सिकन्दर लोधी के अत्याचार का वर्णन करती हैं-

वेद धर्म सबसे बड़ा, अनुपम सच्चा ज्ञान।
फिर मैं क्यों छोड़ूँ इसे, पढ़ लूँ झूठ कुरान।।
वेद धर्म छोड़ूँ नहीं कोसिस करो हजार।
तिल-तिल काटो चाहे गोदो अंग कटार।।

सिकन्दर लोधी ने रविदास जी के अनुयायियों को हिन्दुओं में सदैव से निषिद्ध खाल उतारने, चमड़ा कमाने और जूता बनाने के काम में लगा दिया। अपमानित करने के लिये नाम बिगाड़ कर चमार कर दिया। चमार शब्द का पहला प्रयोग यहीं से शुरू हुआ।

मासिक **'अग्निदूत'** (दुर्ग) ने 'जीवन दर्शन' के अन्तर्गत 'नास्तिक' लोगों पर ओमप्रकाश बजाज के विचार प्रकाशित किये हैं। वह लिखते हैं कि आपने आप को नास्तिक बताना अब एक फैशन सा होता जा रहा है।...हम साधारण लोग परेशानी में ईश्वर को पुकारते हैं, उसे अपना कष्ट बताकर अपना जी हल्का कर लेते हैं। ऐसी परिस्थितियों में हमारे तथाकथित 'नास्तिक' क्या करते होंगे? ओम प्रकाश बजाज लिखते हैं कि हमारी आस्था हमें हर कदम पर एक संबल प्रदान करती है, यदि उसे भी हम नकार बैठेंगे, अपनी प्रबुद्धता के दर्प में, तो फिर कहाँ जायेंगे? क्या करेंगे? ●

# शुभाकांक्षा

(१)

बहुत दिनों बाद यह पत्र लिख रहा हूँ। इधर कुछ पुरानी स्मृतियाँ जाग उठीं। आर्य समाज से मेरा सम्बन्ध बहुत पुराना है। जब नवें-दसवें में पढ़ता था तभी मैंने 'सिद्धान्त-शास्त्री' परीक्षा उत्तीर्ण की थी। पाठ्यक्रम में एक पुस्तक थी 'धर्म का आदि स्रोत'। लेखक थे शायद जस्टिस गंगाप्रसाद। इधर इस पुस्तक को पढ़ने की पुनः जिज्ञासा उत्पन्न हुई। लेकिन इसके बारे में लोगों को पता ही नहीं है। बड़ी मुश्किल से आपका पता मिला। आशा है आप इसे खोज निकालेंगे। यदि अभी उपलब्ध हो तो प्रकाशक का पता देने का कष्ट करें। मेरे पास 'वेदवाणी' के पुराने अंक और कपितय दुर्लभ आर्य साहित्य सम्बन्धी पुस्तकें हैं। यदि आप चाहें तो उन्हें मैं आपको सहर्ष भेंट कर सकता हूँ।

(२)

शायद मेरा पोस्टकार्ड आपको मिला हो। आपके ही सत्प्रयास से 'धर्म का आदि-स्रोत' की प्रति मुझे मिल गयी। इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। 'धर्म का आदि-स्रोत' का इन्टरनेट पर कहीं उल्लेख नहीं है। मैं तो निराश ही हो गया था, सोचा इतनी पुरानी पुस्तक अब कहाँ उपलब्ध होगी। तभी आपका ध्यान आया। बड़ी मुश्किल से आपका पता मिला। इस पुस्तक को मैंने सन् १९५२-५३ में पढ़ा था। एकाएक उसकी स्मृति जग उठी। पुस्तक पाकर मुझे कितनी प्रसन्नता हुई, मैं कह नहीं सकता। इसका श्रेय आपको ही जाता है।

इससे उत्साहित होकर मुझे एक अन्य पुस्तक की याद आ गयी जिसको ज्वालापुर महाविद्यालय के एक आर्य समाजी विद्वान् ने ही लिखा था। पुस्तक का नाम है-'क्रियात्मक मनोविज्ञान' और लेखक हैं-प्रियरत्न आर्ष, जो बाद में स्वामी ब्रह्ममुनि के नाम से प्रसिद्ध हुए। यह पुस्तक उतनी पुरानी नहीं है जितनी कि 'धर्म का आदि-स्रोत'। शायद आप इस पुस्तक का पता लगाने में मेरी सहायता कर सकें।

आशा है 'आर्य लोक वार्ता' अब भी निकल रहा होगा। कृपया नव-प्रकाशित अंक भेजने का कष्ट करें। फिर से मैं उससे जुड़ना चाहता हूँ। यदि कभी आपका रैदास मन्दिर की तरफ आना हो, तो मेरे यहाँ पधारने का कष्ट करें। वाहन न चला सकने के कारण मैं दूर दराज पहुँच नहीं पाता हूँ। और श्रवण शक्ति कमजोर हो जाने के कारण टेली फोन पर भी बात नहीं कर पाता हूँ। अब मेरा दूसरों से सम्पर्क पत्राचार द्वारा या आमने-सामने बातचीत से ही संभव है। आशा है आप स्वस्थ और सानन्द होंगे।

*-डॉ.महेश सिंह कुशवाहा*

*भू.पू.प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, अंग्रेजी तथा आधुनिक योरोपीय भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय*

***

आदरणीय आनन्द कुमार आर्य के भगीरथ प्रयास और पुरुषार्थ के फलस्वरूप इतना तो साफ दृष्टिगोचर होता है कि युवा आर्यवेश जिन्हें मैं २००२ से जानता रहा, अपने स्वभाव में वे आज भी सभी के हैं। मैं अभी भी क्षमाप्रार्थी ही कहाऊँगा कि जबतक पीछे दिनों अपने लिखे अनुसार खुद में परिवर्तन नहीं ला पाता। आपने मुझ निन्दक को अपना स्नेह देकर जो निदान दिया, वह अपने आप में स्वयमेव प्रमाण है। शताब्दी समारोह

२०१३ के साथ लखनऊ शब्द न पाकर मैं चकरा गया। खैर, जिसे चाह, तो उसके लिए राह होती ही है। सो ख्याल आया, यह डालीगंज आर्य समाज के शताब्दी समारोह से संबन्धित था जिसमें प्रथम बार पं.प्रेमशंकर शुक्ल का संयोजन अति कुशलता से मैंने पाया था। ख्याल आता है कि बैंक ऑफ बड़ौदा फैजाबाद में जब मेरी श्रीमती का खाता था तो मुख्य शाखा में वे प्रबंधक थे। कृपया आ.शुक्ला जी को इस संबन्ध में सूचित कर दें। आगे उनका लखनऊ का पता दे दें।

श्री अबोध जी की शुभाकांक्षा से आपकी सहधर्मिणी के ऑपरेशन की जानकारी मिली। उनके पूर्ण स्वास्थ्यलाभ की कामना करता हूँ। मुझे यह ज्ञात हुआ है कि कुछ ही वर्ष में आनन्दबाग, वाराणसी में भव्य कार्यक्रम होना है। ज्ञात हो कि आनन्दबाग महर्षि दयानन्द के शास्त्रार्थ के लिए प्रसिद्ध रहा है। आर्यनेताओं और स्वामी-संन्यासियों को इस ओर ध्यान देना चाहिए। आप अपना विचार आर्य लोक वार्ता के जरिये अवश्य देंगे- आपसे हमारी अपेक्षा है। आ. आनन्द कुमार आर्य आदि को भी इस ओर ध्यान देना होगा।

*-बाँकेबिहारी 'हर्ष'*

*अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद*

***

आपके सम्पादकीय में आर्य समाज

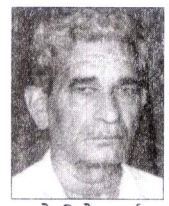

के महत्व, जरूरत पर जो लिखा है, अति प्रशंसनीय है। समाज में आर्य समाजों की शृंखला होनी चाहिये। हर मोहल्ले में हो इसके लिये आर्य समाज की स्थापना हर नयी कालोनी में होना ही चाहिए। शहरों के विस्तार से आर्य समाज भी हर कालोनी में होना चाहिये। देश के उत्थान के लिये, विचारों में प्रगति होनी चाहिये। इसलिये जन साधारण को आर्य समाज सहज सुलभ होना ही चाहिये। कमता व जानकीपुरम् में यदि कोई आर्य समाज स्थापित करेगा तो पहला योगदान मेरा ११,०००/-रुपये का दोनों जगह के लिये होगा। कुल रुपये २२,०००/- जहाँ कहीं भी नया आर्य समाज बनेगा मेरा योगदान हमेशा रहेगा। यह प्रेरणा आपसे मिली है।

*-अश्विनी देव कपूर*

*125, समर विहार, लखनऊ-226005*

***

आर्य लोक वार्ता फरवरी मार्च अंक

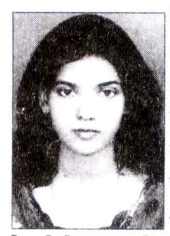

मिला। इसमें स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द दो महापुरुषों के विषय में अग्रलेख पढ़ा जो अत्यंत विद्वत्तापूर्ण है। दोनों भारत के सच्चे सपूत हैं जिनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। 'अक्षरलोक' में कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य तथा होता सदस्य परिचय में महात्मा प्रेममुनि के विषय में जानकारी अनुकरणीय रही। अन्य स्तम्भों में 'वेद प्रवचन', 'मनुष्य का विराट रूप' तथा 'अनन्त की खोज' में आर्योचित ज्ञान दिया गया है। 'शुभाकांक्षा' के विद्वानों के सुन्दर विचार पढ़कर मन मुग्ध हो जाता है। इस बार काव्यायन में आपके दोहे तो अत्यंत मार्मिक और व्यंग्यपूर्ण लगे जो समसामयिक विषयानुकूल हैं। आपकी कुशल सम्पादन कला के साथ आपकी काव्य प्रवीणता को हृदय से नमन। पत्र की आतुर प्रतीक्षा रहती है।

*-सविता वाणी*

*चौक, गौरीगंज, जनपद-अमेठी (उ.प्र.)*

***

फरवरी-मार्च, २०१७ का संयुक्तांक

बहुत ही सुन्दर व ज्ञानवर्द्धक है। प्रथम पृष्ठ पर आर्य जगत के विख्यात वैदिक मिशनरी वैज्ञानिक स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती के भाषण के सम्पादित अंशों को प्रकाशित कर प्रधान सम्पादक जी ने सभी पाठकों पर उपकार किया है क्योंकि उससे पूर्व बहुत ही कम स्वाध्यायशील पाठकों ने पढ़ा होगा। 'विनय-पीयूष' में श्री अमृत खरे जी ने जो यजुर्वेद के मंत्र (६/२१) का पद्यानुवाद किया है वह दिल को छू लेने वाला है-'ऐसा यज्ञ करो मनभावन'। साधुवाद!

'सम्पादकीय' में श्वेत वस्त्रों में साधु ओजोमित्र शास्त्री जी का सच्चा स्मारक क्या हो इस विस्तृत चर्चा की गई है। मैं भी मानता हूँ कि व्याकरणशास्त्र के प्रकाण्ड पंडित आचार्य ओजोमित्र शास्त्री जो महर्षि दयानन्द महाराज के सच्चे सिपाही थे उनकी पावन स्मृति में एक नया आर्य समाज स्थापित किया जाना चाहिये उस स्थान पर जहाँ 'कमता' में पूज्य शास्त्री जी के दो पुत्र अपने परिवारों के साथ रह रहे हैं और जहाँ शास्त्रीजी ने अंतिम श्वास ली थी एक वर्ष पूर्व। अभी यह भी सभी वैदिक प्रेमियों आर्य समाज के पदाधिकारियों, सदस्यों व अन्य नगर वासियों से अपेक्षा की जानी चाहिए कि आदरणीय शास्त्री जी द्वारा स्थापित आर्य समाज महावीरगंज को भी जीवित रखने व उसकी निरन्तर प्रगति हेतु वार्षिक उत्सव व साप्ताहिक यज्ञ-सत्संगों में वेद प्रेमियों को अधिक संख्या में सम्मिलित होना चाहिये।

अंतिम पृष्ठ पर प्रधान सम्पादक जी ने होली पर विशेष 'काव्यायन' स्तम्भ के अन्तर्गत जो सामयिक प्रस्तुति 'मोदी मोदी जप रहा सारा हिन्दुस्तान' प्रकाशित किया है वह तो उनकी कला कौशल व राष्ट्रप्रेम को दर्शाता है। मैं अपने समस्त परिवार व मित्रों की ओर से अपनी कृतज्ञता प्रस्तुत करता हूँ और मुझे पूर्ण विश्वास है कि आर्य्य लोक वार्ता भविष्य में भी इसी प्रकार अपने मिशन में सफल होगा।

*-पाल प्रवीण*

*'योगाश्रम', अलीगंज, लखनऊ*

***

आर्य लोक वार्ता का फरवरी-मार्च अंक



प्राप्त हुआ और पाठक और पाठिकाओं के विचारों से अवगत हुई। स्वाम दयानंद और स्वामी विवेकानन्द के तुलनात्मक अध्ययन में स्वामी दयानंद को अटल सत्य का समर्थक पाते हैं जबकि विवेकानंद जी को एक लचकदार व्यक्तित्व का स्वामी पाते हैं। स्वामी दयानंद मूर्तिपूजा के विरोधी थे जबकि विवेकानंद जी मूर्तिपूजा के विरोध का साहस नहीं कर पाते थे। स्वाम दयानंद पाखण्ड और अन्धविश्वास का खंडन करते थे और सत्य के अटल विश्वासी थे। 'सम्पादकीय' में श्री ओजो मित्र शास्त्री को सच्चा आर्य समाजी दर्शाया गया है। जो नितांत सत्य है। शास्त्री जी ने सत्यनिष्ठा से अपने मनोबल से आर्य समाज को शीर्ष स्थान पर लाने में सफल हुए। 'वेद प्रवचन' में बहुत ही सुन्दर मंत्र है। वेद में प्रभु को यज्ञ नाम से सम्बोधित किया गया है और उसी के द्वारा रचा यह संसार भी यज्ञरूप है और उसी ने हमारा यह जीवन रूप यज्ञ भी रचा है। जो सौ वर्ष तक चलने वाला है। 'होली पर विशेष' बहुत मनभाया-'मोदी मोदी जप रहा सारा हिन्दुस्तान'। 'मनुष्य का विराट रूप' एक सर्वश्रेष्ठ लेख है इसमें स्वाभिमानी के विशेष गुणों पर प्रकाश डाला गया है और बताया गया है कि स्वाभिमानी अन्यायी और नीच व्यक्ति के आगे नत मस्तक नहीं होता है। स्वाभिमानी व्यक्ति जबतक जीता है सम्मान के साथ जीता है। इस प्रकार के व्यक्ति स्वतंत्र व स्वावलम्बी रहकर आत्मसम्मान की रक्षा में तत्पर रहते हैं। इस प्रकार उनको लोक परलोक में सम्मान मिलता है। आर्य लोक वार्ता निरन्तर प्रगति करता रहे यही ईश्वर से प्रार्थना है।

*-प्रमोद कुमारी*

*एम.एस.37, सेटकर-डी, अलीगंज, लखनऊ*

***

आर्य लोक वार्ता के मार्च २०१७ अंक में 'मोदी मोदी जप रहा, सारा हिन्दुस्तान' शीर्षक के अन्तर्गत डॉ.वेद प्रकाश आर्य के चुटीले दोहों को पढ़कर चित्त आनन्द से भर गया। बड़ी सुन्दर भाषा शैली में बड़े संयत ढंग से कवि ने अपनी बात कह दी है; जो सभी के दिलों को छूने वाली है और साथ ही आज की वास्तविक दशा को प्रकाशित करने वाली है। 'आर्य लोक वार्ता' का घर घर में प्रचार होना चाहिए। मेरा निवेदन है कि आर्य लोक वार्ता की एक प्रति निम्नांकित पते पर- मेरे मूल निवास ग्राम व पोस्ट-राघवपुर, जिला हरदोई अवश्य भेजें।

*-इकबाल शंकर श्रीवास्तव*

*नगर आर्य समाज, रकाबगंज, लखनऊ*

***

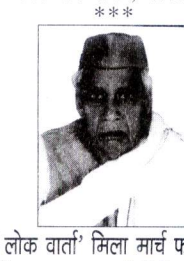

'आर्य लोक वार्ता' मिला मार्च फरवरी अंक।
उपयोगी सुन्दर सुखर, ज्यों निशि पूर्ण मयंक।।

भगवा रंग में रंग रहे, धरा सिन्धु आकाश।
'काव्यायन' में छा गये, अबकी 'वेद प्रकाश'।।

दोहों में चित्रित हुआ, वर्तमान परिवेश।
जन मत गणना बाद का, इनमें चित्र विशेष।।

'प्रतिफल बन्दी नोट की' छाया 'तीन तलाक'।
साथ 'अमेरिकन ट्रम्प' से दिखे प्रभावित पाक।।

देख वेग मोदी-लहर, उड़े किसी के होश।
ई.वी.एम. को दे रहा, कोई मिथ्या दोष।।

'आंगन टेढ़ा नाच' में, 'बन्दर अदरख स्वाद'।
दोहों के मध्य कहावतें, आतीं कितनी याद।।

दर्पण बने समाज का, ये दोहे इकतीस।
कहते होली पर दिखा, 'मोदी' रंग इक्कीस।।

लेख सभी उत्तम दिखे, समाचार दें ज्ञान।
कविता में 'अमृत खरे' दें पीयूष प्रदान।।

ज्ञान प्रवर्द्धक अंक यह, सम्पादक जी धन्य।
मत 'अबोध' का है यही, माने अर्थ न अन्य।।

*-दयानन्द जड़िया 'अबोध'*

*370/27, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ*

***

आर्य लोक वार्ता फरवरी-मार्च अंक में

महर्षि दयानन्द सरस्वती और राष्ट्रयोगी विवेकानन्द के देशहित के लिए महान त्याग की चर्चा अत्यंत प्रेरणास्पद है। दोनों के व्यक्तित्व और कृतित्व की तुलना तो की ही नहीं जा सकती क्योंकि दोनों महापुरुष अपने अपने क्षेत्र में अप्रतिम योद्धा रहे हैं। राष्ट्र ऐसे महापुरुषों के प्रति सदैव कृतज्ञ रहेगा। 'अक्षरलोक' में कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य विषयक अभिनन्दन ग्रन्थ का सार संक्षेप मननीय और पठनीय है। ब्रह्मलीन आचार्य ओजोमित्र के स्मारक बिन्दु पर आपके सम्पादकीय विचार सर्वथा सटीक और अनुकरणीय हैं। उनका स्मारक ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। विविध गतिविधियों की जानकारी एवं समाचार जनमानस को आत्मिक स्तर से जोड़ते हैं। 'विनय पीयूष' की काव्यानुभूति से हृदय अभिभूत हुआ। शब्दसाधक श्री अमृत खरे को अमित साधुवाद। राजनीति के बदलते घटनाक्रम पर होली के रंगों से सराबोर आपके दोहे अद्वितीय लगे। सचमुच मोदी मोदी जय के साथ भारत का सबसे विशाल प्रदेश योगी-योगी जपने लगा है। दोनों कर्मठ राजनेताओं से राजनीति की दशा और दिशा में सकारात्मक सुधार सुस्पष्ट है। मेरी विनम्र अभिलाषा है-

भारतमाता का वीरोचित वन्दन होने वाला है।
आर्यभूमि का पुष्पित-हर्षित नन्दन होने वाला है।
कर्मयोगियों के हाथों शासन-सत्ता आने से-
अखिल विश्व में भारत का अभिनन्दन होने वाला है।।

*-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'*

117, *आदिलनगर, लखनऊ -226022*

***

आर्य लोक की वार्ता, सम्पादन चातुर्य।
वैदिक भाव प्रधानता, भाषागत माधुर्य।।

गुरुमय ज्ञान महानता, पत्र नहीं स्वाध्याय।
मानस मनः हितैषिनी, 'रमा' कर्म पर्याय।।

नहीं पत्रिका मंत्र है, चिन्तन मनन विशेष।
वर्ष अठारह में किया, देखो 'रमा' प्रवेश।।

राष्ट्रधर्म युग चेतना, चिन्तन रूपी तंत्र।
शिव संकल्पम् हेतु है, 'रमा' पत्र यह मंत्र।।

एक-एक सुस्तंभ की, महिमा अमित अपार।
गागर में सागर रमा, विविध ज्ञान भण्डार।।

प्रथम पृष्ठ की श्रेष्ठता, चिर-नूतन इतिहास।
पढ़कर पाठक जनों की, बुझती अन्तस प्यास।।

'रमा' विनय-पीयूष से, बहता अविरल स्रोत।
करते सुजन विहार यों, ज्यों जल में हो पोत।

सुरस 'रमा' पीयूष से, करे रसिक जन पान।
मंत्र काव्य रस सोम से, भीजे तन मन प्रान।।

समुल्लास क्रमशः 'रमा', है सत्यार्थ प्रकाश।
प्रवचन कथा विधान से, पाखंडों का नाश।।

काव्यायन में हैं 'रमा', खिले बसन्ती फूल।
कालजयी कविता सदा, कवि के है अनुकूल।।

शुभाकांक्षा है यही, पथ जो करे प्रशस्त।
रहे प्रकाशित गगन में, 'रमा' नहीं हो अस्त।

*-रामा आर्य 'रमा'*

*'417/10, निवाजगंज, चौक लखनऊ-226003*

***

धारावाहिक-(71)

# मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

इस प्रकार जो विकार-ग्रस्त, अधिकार प्रमत्त नहीं होता वही उन्नति करता है। संसार उसीका सत्कार करता है क्योंकि उसके द्वारा सदाचार की रक्षा होती है और सदाचार से लोक-व्यवहार चलता है।

*(ग) कृती :-* कृती धन्य हैं गोस्वामी तुलसीदास ने 'सीस मुकुट, कटि काछनी, कर मुरली, उर माल' से सुसज्जित कृष्ण की मूर्ति को देखकर एक बार कहा था-

का बरनौं छबि आपकी, भले बने हौ नाथ।
तुलसी मस्तक तब नवै, धनुष-बान हो हाथ।।

संसार की मनोवृत्ति भी ऐसी ही होती है। वह पुरुषार्थी का आदर करता है। कोई कैसा भी भाग्यवान् और उच्च विचारों का विद्वान् क्यों न हो, यदि वह कर्मशील नहीं तो किसी काम का नहीं है। मनुष्य की योग्यता उसके कार्यों से प्रकट होती है, हवाई किले या बातें बनाने से नहीं। इसलिए कोरे कल्पनाशूर तथा वचनवीर को कोई गौरव नहीं देता। महाभारत में कहा है कि जो केवल बड़ी बड़ी बातें करता है और कुछ करके नहीं दिखाता, उसको विद्वान् लोग कायर कहते हैं--'अकर्मणा कथितेन कुपुरुषं विदुः'- उद्योगपर्व। कायर का मान कौन करेगा? मान लीजिये, हम आपको बड़े-बड़े आश्वासन दें और कुछ करके न दिखायें अथवा कुछ करने की चेष्टा भी न करें तो आप हमें हृदय से धन्य नहीं कहेंगे। करने और न करने से मनुष्य का मान इसी प्रकार बढ़ता-घटता है।

हम एक उदाहरण और देते हैं। मान लीजिये, हमने एक ग्रन्थ लिखा। बहुत से लोग उसे देखकर कह सकते हैं कि ऐसा या इससे अच्छा तो हम भी लिख सकते थे। जबतक वे स्वयं वैसी कोई रचना प्रस्तुत नहीं करते, तबतक उनके दंभ का कुछ भी मूल्य नहीं है। इसी भाव को कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने इस प्रकार व्यक्त किया है--'शहद की मक्खी कहती है कि तू इससे भी छोटा बनाकर देख- बनता है कि नहीं।' कहने की अपेक्षा करने वाले का गौरव कहीं अधिक है। संसार यह नहीं देखता कि हम क्या कर सकते हैं। वह तो केवल यह देखता है कि हम क्या करते हैं और उसीके अनुसार वह हमें मान-स्थान प्रदान करता है। एक सुप्रसिद्ध अंग्रेजी कवि ने कहा है कि-'अपनी योग्यता के सम्बन्ध में हम कोई धारणा उन कामों के आधार पर बनाते हैं, जिन्हें हम सोचते है कि हम कर सकते हैं; इसके विपरीत दूसरे लोग हमारी परीक्षा उन कामों के आधार पर करते हैं जिन्हें हम करके दिखा चुके हैं'--

"We judge ourselves by what we feel capable of doing, while others judge us by what we have already done"--*Longfellow*.

वास्तव में, कृती होने से जीवन की सार्थकता है। ऐसा व्यक्ति अपने कर्म से अपना उद्धार ही नहीं, लोक का उपकार भी करता है, इसलिये वह संसार में प्रतिष्ठित होता है। काम से ही नाम होता है।

*(घ) शूरवीर :-* 'वीरभोग्या वसुन्धरा' में शूरवीर धन्य है। एक नीतिकार ने कहा है कि शूर का सर्वत्र मान होता है और भीरु सर्वत्र मारा जाता है।--'सर्वत्र लाल्यते शूरो, भीरुः सर्वत्र हन्यते।' पराक्रमी की प्रशंसा उसके शत्रु भी करते हैं। जिस समय महावीर रावण राम के साथ प्राणान्तक संग्राम करने आया, उस समय, कालिदास के शब्दों में, लोकपालों को जीतने वाले, अपनी मुण्ड-मालिका से महादेवजी को पूजने वाले, कैलाश पर्वत को उठाने वाले उस वैरी की राम ने मन ही मन बड़ी सराहना की-

जेतारं लोकपालानां, स्वमुखैरर्चितेश्वरम्।
रामस्तुलितकैलासमरातिं बह्वमन्यत।।
--रघुवंश

शूरवीर कौन है? तुलसीदास ने कहा है-

जरहिं पतंग विमोह-वश, भार वहहिं खर-वृन्द।
ते नहीं शूर कहावहीं, समुझि देखु मतिमन्द।।

मूढ़ता-वश आग में कूद पड़ने वाले दुस्साहसी पतंगों को तथा बोझ लेकर चलने वाले किंकर्त्तव्यविमूढ़ गधों को कोई पराक्रमी नहीं कहता। इसी प्रकार दुर्बलों को दबाने वाले को शूर की पदवी नहीं मिलती। उसे क्रूर कहते हैं। घर बैठे मच्छर मारने वाले या तीस मक्खियों को मौत के घाट उतारने वाले तीसमारखाँ को कोई धन्य नहीं कहता। उनकी तो हँसी ही होती है। भले आदमियों पर कीचड़ उछालना, बड़े-बड़ों को नीचा दिखाना, किसी का मान लूटना, डाका डालना, अवसर का अनुचित लाभ लेना और छल-कुचक्र से दूसरों को हराना आदि शूरवीर के नहीं, शठ के लक्षण हैं। जन-बल, धन-बल या स्थान-बल के भरोसे ऐंठना भी शूरवीर होने का प्रमाण नहीं है। दंभी, हिंसक और अकारण उछल-कूद मचाने वाले दुष्ट तथा दुराग्रही कलही को हम शूर नहीं कहेंगे। प्रमत्त, प्रलापी तथा दूषक-विदूषक शूर-समुदाय में स्थान नहीं पाते। अन्धेरनगरी या साधारण परिस्थिति में प्रतिष्ठित होने वालें की यही दशा होती है--तौ लौं तारा जगमगै, जौं लौं उगै न सूर।'

शूरवीर वह है जो कर्मक्षेत्र में अपने बल-विक्रम, साहस-धैर्य और कर्त्तव्य परायणता के कारण प्रशंसित हो। एक प्राचीन दार्शनिक विद्वान् ने लिखा है कि संसार में तीन प्रकार के घोड़े होते हैं : एक तो लद्दू- जो जीवन भर दूसरों का बोझ ढोते-ढोते मर जाते हैं; दूसरे कोतल जो शोभा के लिए द्वार पर या अस्तबल में बँधे रहते हैं और कभी-कभी क्रीड़ा कौतुक के लिए बाहर लाकर सवारों द्वारा नचाये जाते हैं; तीसरे लड़ाई के घोड़े-जो गोली-गोलों के बीच से निर्भय होकर आगे दौड़ते हैं। इन्हीं की प्रशंसा होती है। मनुष्यों के सम्बन्ध में भी यही बात सत्य है। जो लोग जीवन-भर घर का ही बोझ ढोते रहते हैं, उन्हें नर-रूपी लद्दू घोड़ समझना चाहिये। जो लोग बैठे-बैठे आराम से खाते-पीते हैं और बंधे ढर्रे पर चलते हैं या दूसरों के इशारों पर नाचते हैं वे कोतल हैं। जो लोग साहसपूर्वक जीवन-संग्राम में आगे बढ़ते हैं, विघ्न-बाधाओं के बीच में भी निर्भय होकर दौड़ते हैं और यथाशक्ति पौरुष-पराक्रम दिखाते हैं, उनकी तुलना युद्धाश्व से की जा सकती है। वे ही नरवीर माने जाते हैं। लोक में उन्हीं का गुण-गान होता है।

वीर की परीक्षा विपत्ति में होती है। जो संकट और संघर्ष में पड़ कर भी नहीं घबराते वे ही बुद्धिमान् तथा शूरमा माने जाते हैं--'संकटे हि परीक्ष्यन्ते प्राज्ञाः शूराश्च संगरे।' ऐसे व्यक्ति को विजय मिले या न मिले, उसका बल-विक्रम ही उसके लिए गौरव-प्रद होता है।

*(मनुष्य का विराट् रूप' से साभार, क्रमशः)*

व्याख्यान माला (27)

# अनन्त की खोज

-महात्मा आनन्द गिरि-

एक श्लोक मुझे याद आया-

रूपं रूप विवर्जितस्य भवतो ध्यानेन कल्पितं।
स्तुत्यानिर्वचनीयताखिल गुरो दूरीकृता यन्मया।।
व्यापितच्च निराकृतं भगवतो यत्तीर्थ यात्रादिना।
क्षन्तव्यं जगदीश तद्विकलता दोषत्रयं मत्कृतम्।।

किसी पुरुष का वचन है कि प्रभु आप रूप विवर्जित हैं, फिर भी मैंने ध्यान में आपके रूप की साधना कर ली है। स्तुति के द्वारा आपके स्वरूप की अनिवर्चनीयता भंग की है। तीर्थयात्रा द्वारा सर्वव्यापकत्व का हनन किया है। विकलता में किये गये इन तीनों दोषों को हे जगदीश! क्षमा करें! भावुकतापूर्ण विकलता ने भक्तों को विवश किया परिणाम स्वरूप साकारवाद को जन्म मिला। अगर ईश्वर को बिल्कुल अपने जैसा ही कर दिया जाता तो उसकी विशेषता स्थापित न हो पाती। अतः आवश्यकता थी कि मनुष्य से विलक्षण उसकी आकृति होनी चाहिए वैसा ही किया गया। मनुष्य के केवल दो हाथ और एक सिर हैं तो भगवान के चार हाथ और कई सिर लगा दिये गये। तीन सिर से लेकर हजारों सिर तक की विराट कल्पना कर डाली गई। यह बात बिल्कुल अलग है कि इस कल्पना का शरीर विज्ञान से कोई तालमेल नहीं बैठ सकता। मानव धड़ में पाँच सिर अथवा आठ हाथ चित्र में तो लग सकते हैं किन्तु व्यवहारिकता में असम्भव है। अगर मनुष्य की तरह पशुओं की भाषा होती और वह चित्रकला जानते होते तो वह भी परमात्मा को अपने रूप में ही चित्रित करते। अगर तब एक कुत्ते से पूछा जाता कि बताओ परमात्मा कैसा है तो वह उत्तर देता कि बिल्कुल कुत्ता जैसा ही है अन्तर केवल यह है कि मेरे एक सिर और एक दुम है जब कि उसके पास दो सिर और तीन दुम हैं। अगर किसी बैल से पूछा जाता तो वह उत्तर देता परमात्मा सांड़ है और विशेषता यह है कि उसके आठ खुर हैं, दो सिर हैं और दस सींग हैं ओर किसी त्रिकोण से पूछा जाता तो उसका उत्तर होता कि परमात्मा भी त्रिकोण है अन्तर केवल तीनों कोणों के योग में है। हमारे तीनों कोण बराबर दो समकोण के हैं और चूंकि वह परमात्मा है तो उसका तीन कोण चार समकोण के बराबर है। कहने का तात्पर्य है कि परमात्मा जैसा है वैसा जानने समझने का प्रयत्न न करके लोगों ने उसे अपना जैसा बना लिया। होना तो यह चाहिए था कि हमारी चेतना उत्थित होकर उसके साथ लय होती ताकि जैव चेतना का रूपान्तरण होता। ऐसा नहीं हुआ अपितु बिल्कुल विपरीत किया गया। परमात्मा को दिव्य धरातल में उतर उसका मानवीकरण कर दिया। उसको बिल्कुल अपना जैसा बना दिया। हमारे बाल-बच्चे तो उसके भी बाल-बच्चे बना दिये। विवाह पत्नी सब कुछ उसके साथ जोड़ दिया गया। इस प्रकार भावुकता ने साकारवाद को जन्म दिया। साकारवादी जब मूर्ति के आगे खड़ा होता है तो समझता है कि उसे बड़ी शान्ति और सन्तोष मिल रहा है किनतु मूर्ति पूजक की पूजा काल की अचेतन चेष्टाओं को ध्यान से देखने पर दूसरा ही रहस्य खुलता है।

एक परिवार में यज्ञोपवीत संस्कार था, अच्छा खाता-पीता परिवार था वैसे वे ब्राह्मण थे सो यज्ञोपवीत बड़ी धूमधाम से होना था। पच्छाह के ब्राह्मणों में विवाह के अतिरिक्त वही खर्चीला संस्कार होता है। सारा घर रिश्तेदारों मेहमानों से भरा पड़ा था। मेहमानों सम्बन्धियों में विभिन्न योग्यता और स्तर के लोग थे। गृहपति (यजमान) के साढू भाई आर्य समाजी थे। संस्कार पौराणिक रीत्यानुसार होना था अतः दोनों साढू भाइयों में थोड़ी नोंक झोंक चलती ही रहती थी। गृहपति शिवचरण लाल पूजा पाठ वाले भावुक थे। प्रातः ५ बजे से ११ बजे तक श्री सालिग्राम ठाकुर की सेवा में रहते। ११ बजे भोग लगाने के बाद उनका मौन खुलता और तब घर-गृहस्थी के काम में जुटते थे। संस्कार के एक दिन पूर्व की घटना है नित्य की तरह शिवचरण जी सिंहासन के सामने आँख मींचे बैठे थे। ठाकुर जी के आगे भोग रखा था। शान्त ध्यानावस्थित थे। आगन्तुक किसी मेहमान का साढ़े तीन वर्ष का एक शैतान बच्चा खेलता-खेलता उनके पूजा गृह में आ गया, बच्चे ने एक क्षण सारी स्थिति का अवलोकन किया फिर चुपचाप सिंहासन के पास पहुँचा, ठाकुर जी को उठाकर बाहर ले आया। कुछ देर खेलने के पश्चात ठाकुर जी को बदामदे में छोड़कर दूसरे खेल में लग गया। कुछ देर पश्चात् शिवचरण जी ने आँखें खोलीं और ज्यों ही भोग की थालियाँ उठाईं उनकी आँखें आश्चर्य से फटी रह गईं। कहाँ तो सर्वदा यह कल्पना रहती थी कि कभी तो भगवान सचमुच भोग ग्रहण करके कृतार्थ करेंगे जैसा भक्त कथाओं में वह पढ़ते रहते थे। गीता प्रेस गोरखपुर का कल्याण इस प्रकार की कहानियाँ छापता रहता है और शिवचरण जी कल्याण के नियमित पाठक थे। भोग तो भगवान ने आज तक ग्रहण नहीं किया उल्टे स्वयं ही गायब हो गये। बेचारे परेशान हो उठे जब तक भोग के बाद कर्म काण्ड और आरती न कर लें वे बोल भी नहीं सकते थे। यहाँ ठाकुर जी ही लोप हो गये। क्या किया जाय? शिवचरण जी धर्म संकट में फँस गये। दरवाजे की साँकल खटखटाकर गृहिणी को बुलाया, वह आकर द्वार पर खड़ी हो गई। पूजा गृह के अन्दर जाना निषिद्ध था जब तक शिव जी की पूजा नहीं होती तब वक वह कमरा सबके लिए वर्जित क्षेत्र रहता था। पत्नी ने प्रश्न सूचक दृष्टि से बुलाने का कारण पूछा उन्होंने सिंहासन की ओर इशारा किया। अँगूठे और तीन अँगुलियों के प्रयोग से सालिग्राम जी की आकृति बनाई, वे पूछना चाहते थे कि आखिर ठाकुर जी का क्या हो गया? पत्नी समझी गुड़ माँग रहे हैं शीघ्रता से गई और गुड़ की डली ले आई। इधर शिवजी का क्रोध और भय दोनों बढ़ते जा रहे थे। आखिर उन्हें अपना मौन तोड़कर कहना ही पड़ा कि ठाकुर जी सिंहासन से कहाँ चले गये? खोज की गई ठाकुर जी बरामदे के कोने में सर्फ के खाली डिब्बे पर थे। उन्हें वहाँ से उठाकर फिर शुद्धोदक स्नान कराया गया और पूजा का शेष विधिविधान पूर्ण हुआ।

जब शिवचरण जी पूजा गृह से बाहर आये तब उनके आर्य समाजी साढू भाई ने पूछा-'जब ठाकुर बाहर घूमने के लिए सिंहासन से उठ रहे थे तभी आपने उन्हें क्यों नहीं रोका?' वह बोले-'मैंने देखा नहीं था।' 'क्या आप ब्याज खाता बना रहे थे (मन्द हास्य का स्वर) या पूजा गृह से बाहर चले गये थे?' उन्होंने प्रश्न किया। शिव जी ने कहा-'नहीं भई वहीं बैठा था किन्तु आँखें

बन्द कर रखी थीं।' 'वाह भाई भक्तराज क्या कहने' ठहाका लगाते हुए आर्य समाजी ने कहा- 'बड़े गुनाहगार हो साक्षात् ठाकुर सामने बैठे हैं और तुम आँखें नीचे किये हुए थे। भला बताओ क्या यह शिष्टता है भगवान को बुरा नहीं लगता कि भक्त आँख मींचकर उसके सामने बैठे?' मैं इन दोनों की बातें सुन रहा था। शिवचरण जी चुप कुछ उत्तर न दे पा रहे थे इतने में उनके साढू ने एक और प्रश्न खिसका दिया। पूछा-'जानते हो? आँखें क्यों बन्द हो जाती हैं? बात बड़े नुक्ते की चल रही थी। वास्तव में जब कभी कोई भी मूर्ति पूजक इष्ट प्रतिमा के सम्मुख खड़ा होता है तत्काल उसकी आँखें बन्द हो जाती हैं और हाथ जुड़कर प्रणाम (नमस्ते) की मुद्रा में आ जाते हैं। उनका प्रश्न सुनकर मैं सोचने लगा कि आखिर क्या कारण है हजारों मील यात्रा करके भक्त तीर्थ स्थानों में प्रसिद्ध मन्दिरों में पहुँचते हैं किन्तु जब गर्भ गृह के आगे ठाकुर दर्शन को उपस्थित होते हैं तो तत्काल आँख मींच लेते हैं। यह क्या भद्रता है? कि किसी से मिलने जाओ और जब सामने पहुँचो तो आँख मींच लो। शिव चरण जी बोले-'आप ही बताइये ऐसा क्यों होता है?' महाशय जी ने पते की बात कही, बोले-'जब तुम जड़ प्रतिमा को परमेश्वर समझ कर सामने खड़े होते हो तब हृदयस्थ परमेश्वर तुम्हारी आँखें बन्द कर देते हैं। वह कहते हैं कि भोले भक्त मुझे देखना चाहता है तो आत्मा में देख जिसको परमात्मा समझ कर देख रहा है वह मैं नहीं हूँ।' भगवान के इस आदेश को आत्मा आँख मींचकर समझाती है। इस सत्य को ऋषियों ने बड़े स्पष्ट रूप से कहा है पर आप लोग अन्धविश्वास और संस्कार की प्रतिबद्धता में आप्त वाक्यों को न तो पढ़ते हैं और न समझने का प्रयत्न करते हैं। केन उपनिषद के ऋषि कहते हैं-

यच्चक्षुषा न पश्यति येन यक्षपि पश्यति।
तदेव ब्रह्म तद् विद्धि यदिदमुपासते।।

नेत्र जिसकी ज्योति से ही देख पाते हैं उसे नेत्र नहीं देख सकते उसको तुम परमेश्वर जानो। जिसे आंखों से देख रहे हो, उपासना कर रहे हो वह ब्रह्म नहीं है।

यद्वाचानभ्युदितं येन वागभ्युद्यते।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते।।

जिससे वाणी का अभ्युदय होता है, वाणी उसका वर्णन नहीं कर सकती तुम जिसको ब्रह्म समझ कर वर्णन कर रहे हो वह ब्रह्म नहीं है।

यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम्।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते।।

जिसके प्रताप से मन मनन करता है मन उसको नहीं सोच सकता जिसको तुम ब्रह्म समझ कर मनन कर रहे हो वह ब्रह्म नहीं है। वेद, उपनिषद इत्यादि ग्रन्थ ईश्वर के साकारत्व का घोर निषेध करते हैं।

*(क्रमशः)*

# काव्यायन

रामनवमी पर विशेष

## धर्म रथी श्री राम

❑डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'

कामना यही है वही रावणारि राघवेन्द्र
मंगल हमारा करें सर्वमंगलों के धाम।
शीश जटामुकुट कलित पुष्प-गुच्छ-युत,
भाल पर तिलक त्रिलोक-लोचनाभिराम।
अक्ष अरुणाभ मंजु मोहक सुमुख छवि,
कर चाप-श्याम पीत-अम्बर धरे ललाम।
अन्तर हमारे धर्म-ज्योति का करें प्रकाश,
जगे नरता का भाग्य भारत हो पुण्य धाम।

कोमल करों से जगजननी के लालित जो,
अबल अनाथ अशरण जन के शरण।
ब्रह्मा-विष्णु-शंकर से नित्य अभिनंदित हैं,
दैन्य-दोष-दुख-अन्धकार-अघ के क्षरण।
'भायप भगति' के अकम्प अवलम्ब त्राण,
साधु-साधुता के धर्म-प्राण प्राण-संचरण।
अक्षय अनुग्रह से पूर्ण करें धरा-धाम,
मंगलकरण राघवेन्द्र-राम के चरण।।

*–538क/88, त्रिवेणी नगर, प्रथम, सीतापुर रोड, लखनऊ*

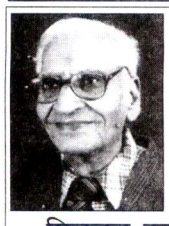

## रामजन्म हम आज मनायें

❑सुरेन्द्र नाथ पाण्डेय 'मनीष'

मिलजुल कर अपनी धरती के सारे खर पतवार हटायें।
तन मन मर्यादित कर अपना, राम जन्म हम आज मनायें।
जितने ऊँचे भवन उठ रहे
उतना अधःपतन है मन का
मानवता नत मस्तक उतनी
जितना उच्च स्तर जीवन का
ऐसी विषम समस्या को हम, यथाशीघ्र ही अब सुलझायें।
भरत सदृश जनप्रतिनिधियों को हम विधायिका में पहुंचायें।
मानव का रूपान्तर हमको
कठपुतली में होता दिखता
लौहकार धौंकनी सदृश ही
मात्र यंत्रवत हृदय धड़कता
इस संवेदनहीन परिस्थिति से अतिशीघ्र मुक्ति हम पायें।
सुहृद भावना से भावित हो, उर को समता से सरसायें।
अब न कुपथ की ओर तनिक भी
अपना जीवनरथ चल पाये
क्योंकि पुकार रही अन्तर्ध्वनि-
'अग्ने नय सुपथा राये'
ऋषियों के तपबल से सिंचित सुरभित सुन्दर सुमन खिलायें।
और राम के आदर्शों को एक बार हम फिर अपनायें।

*–सिविल लाइन्स, बाँदा (उ.प्र.)*

## दयानन्द-संदेश

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

दयानन्द जी के वचन, आर्ष-ग्रन्थ-सुविचार।
मानवता को शक्ति दे, वैदिक धर्म प्रचार।।
दिव्य ज्ञान भण्डार हैं, पुण्य पुरातन वेद।
ढोंग प्रदर्शन त्याग से, मिट जायेंगे भेद।।
आर्ष ग्रन्थ से हो रहा, ज्योतित राष्ट्र-अतीत।
प्रबल पश्चिमी वायु से, हुआ ज्ञान भयभीत।।
सहज सरल संस्कार विधि, अपनायें सब आर्य।
पढ़ सत्यार्थ प्रकाश को, करें लोकहित कार्य।।
अमृत रूपी वल्लरी, पुष्पित आर्य समाज।
भ्रमित विश्व को चाहिए, वेद दिशा ही आज।।
ऋषिवर के उपकार का, सारा विश्व कृतज्ञ।
तन-मन को दे स्वच्छता, आर्य समाजी यज्ञ।।
घोर अविद्या नष्ट हो, विद्या की हो वृद्धि।
सबकी उन्नति में निहित, जग की परम समृद्धि।।

*–117, आदिल नगर, विकासनगर, लखनऊ*

## दिल मचलता है !

❑डॉ. कैलाश निगम

उम्र भर धूप में जो जलता है।
वो शजर फूलता है, फलता है।
जो भी चलता है सीधी राहों पर,
सबसे आगे वही निकलता है।
वो ही लाता है सुब्ह का पैगाम,
रात भर जो चिराग जलता है।
जिसमें शामिल नही है उसकी याद,
हर वही लम्हा दिल को खलता है।
वो मिटाता है खुद वजूद अपना,
बर्फ की तरह जो पिघलता है।
उसको देखा गया है मंजिल पर,
ठोकरें खाके जो सँभलता है।
चुक जाता है वक्त पर जो भी,
उम्र भर अपने हाथ मलता है।
खूब से खूबतर है जो 'कैलाश',
उसको पाने को दिल मचलता है।

*–4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ*

## दयानन्द जन्मोत्सव पर

❑दयानन्द जड़िया 'अबोध'

किया था प्रचार कार्य, आर्य धर्म के हितार्थ,
वेदों का महत्त्व सब, को ही समझाया था।
डाकिनी पिशाचिनी से, डरी न कदापि बन्धु,
ब्रह्म को अनादि कह, भ्रम को मिटाया था।।
जब धर्म धारा कुछ, मन्द दिखलाई पड़ी,
तब गर्व युक्त ओम, ध्वज लहराया था।
'दयानन्द' धर्म के थे, रक्षक प्रतीत हुये,
जिन्होंने कुरीतियों को, जड़ से मिटाया था।।

लिखा सत्यार्थ प्रकाश, धर्म-ग्रन्थ सौम्य अति,
धर्म की सुसच्ची राह, जिसमें दिखाई है।
'दयानन्द' आर्य समाज के प्रणेता बने,
ढोंग व पाखण्ड छोड़ो, बात समझाई है।
मूर्तिपूजा छोड़ यज्ञ करिये पवित्र मंजु,
शुद्ध रहे पर्यावरण बात भाई है।
ऋषि दयानन्द का है जन्म-दिन आया शुचि,
ओम ध्वज ऊँचा रहे, इच्छा ये समाई है।।

*–370/27, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ*

## हर्ष-चतुष्पदी

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

तकरीबन सारी पोस्ट है मेल, पुलिंग वाचक,
गर विपरीत हो मैटर, कोई जाने कहाँ तक।

प्रिंसिपल ने उतरवाये वस्त्र, शीर्षक बना रोचक-
खोदा पहाड़ निकली चुहिया, हैरान हैं पाठक।

धइल्ले से अखबार इसी कला से बिकते हैं,
सरे आम सुबह शाम अवाम को ठगते हैं।

आशीष देते मरे व्यक्ति की शोभायात्रा निकालते हैं,
बाद में जल प्रवाह करके सुयश अपना बखानते हैं।

*–अक्ष मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद*

## कालजयी काव्य

## परिवर्तन में टेक

❑जयशंकर 'प्रसाद'

दुःख की पिछली रजनी बीच
विकसता सुख का नवल प्रभात;
एक परदा यह झीना नील
छिपाये है जिसमें सुख गात।

जिसे तुम समझे हो अभिशाप
जगत की ज्वालाओं का मूल;
ईश का वह रहस्य वरदान
कभी मत इसको जाओ भूल।

विषमता की पीड़ा से व्यस्त
हो रहा स्पन्दित विश्व महान;
यही दुख सुख विकास का सत्य
यही भूमा का मधुमय दान।

नित्य समरसता का अधिकार
उमड़ता कारण जलधि समान;
व्यथा से नीली लहरों बीच
बिखरते सुख मणि गण द्युतमान।

तप नहीं केवल जीवन सत्य
करुण यह क्षणिक दीन अवसाद;
तरल आकांक्षा से है भरा
सो रहा आशा का आह्लाद।

प्रकृति के यौवन का शृंगार
करेंगे कभी न बासी फूल;
मिलेंगे वे जाकर अति शीघ्र
आह उत्सुक है उनकी धूल।

पुरातनता का यह निर्मोक
सहन करती न प्रकृति पल एक;
नित्य नूतनता का आनन्द
किये है परिवर्तन में टेक।

युगों की चट्टानों पर सृष्टि
डाल पद - चिन्ह चली गम्भीर;
देव, गन्धर्व, असुर की पंक्ति
अनुसरण करती उसे अधीर।

*('कामायनी' से)*

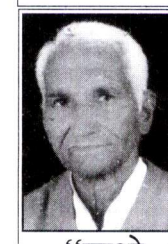

वीर भगतसिंह बलिदान दिवस पर

## मातृ-संदेश

❑कौशल कुमार

''जाओ मेरे लाल ! करो
आलोकित युग युग जग सारा।
फाँसी के तख्ते पर बोलो,
'इन्कलाब की जय' नारा।।
तेरी ज्योति पताका फहरे,
कीर्ति-वृद्धि क्षण क्षण होगी।
सारे भारत के घर घर में,
तेरी 'रामायण' होगी''।।
यह प्रेरक आशीष अमर था,
'भगतसिंह' को माता का।
जिससे हुआ प्रशस्त मोक्ष-पथ,
क्रान्ति-मन्त्र उद्गाता का।।
सुनकर यह सन्देश 'वीर-
वर' का जीवन धन्य हुआ।
बलिदानी इतिहासों में,
चूड़ामणि वीर अनन्य हुआ।।
बलिवेदी की ओर अग्रसर,
उसको सहज प्रवाह लगा।
फाँसी का आलिंगन करने,
को सहर्ष उत्साह जगा।।
उसको लगने लगे देवगण,
अपनी ओर बुलाते से।
और सभी भारतवासी,
सम्मान विदा को आते से।।

*–ग्राम–बहजादका, पो.–पिलौना, जिला–मेरठ–250401*

## लखनऊ-समाचार

### आर्य समाज शृंगार नगर में 101 कुण्डीय यज्ञ

भारतीय नव संवत्सर २०७४ वैक्रमाब्द पर २८ मार्च २०१७, मंगलवार को आर्य समाज शृंगार नगर लखनऊ द्वारा निकट पार्क में १०१ कुण्डीय यज्ञ आयोजित किया गया जिसमें लखनऊ नगर के सैकड़ों आर्य नर-नारियों ने भाग लिया तथा आहुतियाँ दीं। प्रत्येक वर्ष की भाँति चार व्यक्तियों- श्रीमती सुदेश कोहली, श्री ओम प्रकाश कोहली, श्रीमती संयुक्ता भाटिया ओर डा.श्रवण कुमार को शाल ओढ़ाकर, माल्यार्पण कर सम्मानित किया गया। यज्ञ का संचालन डॉ.रूप चन्द्र 'दीपक' ने किया। सामूहिक जलपान के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। *(राकेश माहना, मंत्री)*

### आर्य उपप्रतिनिधि सभा द्वारा होली मिलन

१६.०३.१७। आर्य उपप्रतिनिधि सभा, लखनऊ के तत्वावधान में प्रतिवर्ष की भांति होली मिलन समारोह आर्य समाज मन्दिर, लाजपतनगर, चौक लखनऊ में सम्पन्न हुआ। संगीत के सुमधुर कार्यक्रम के पश्चात् आचार्य संतोष कुमार वेदालंकार, रमेश चन्द्र त्रिपाठी (अमृतमुनि वानप्रस्थी), श्री प्रेममुनि इत्यादि कई विद्वानों ने होली पर्व का संदेश देते हुए अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन श्री प्रत्यूषरत्न पाण्डेय ने किया। इस अवसर पर नगर की अधिकांश आर्य समाजों के प्रतिनिधिगण मौजूद थे। स्वल्पाहार के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। *(प्रत्यूषरत्न पाण्डे)*

### श्रीरामनवमी पर्व एवं जन्मदिवस

श्रीरामनवमी के पावन पर्व के मंगलमय आलोक में जिन्हें जन्म लेने का सौभाग्य मिला है, वे धन्य हैं और उनके माता पिता भी सौभाग्यशाली हैं। विवेकानन्द पुरी, लखनऊ में श्री निशीथ कंसल का जन्मदिवस दि.०५.०४.१७ को मनाया गया। यज्ञ की सम्पूर्ण व्यवस्था श्रीमती रजनी कंसल ने की। पुत्री सुश्री नेहा तथा उनके पुत्र- आदित्य, पुत्री-आद्या ने रूचिपूर्वक यज्ञ में भाग लिया। डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने आशीर्वाद के साथ साथ श्रीराम के जीवनादर्शों पर प्रकाश डाला।

### डॉ.वेद प्रकाश आर्य का जन्मदिवस

श्रीरामनवमी के पुनीत पर्व पर प्रत्येक वर्ष डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता का जन्म दिन मनाया जाता है। इस वर्ष भी दिनांक ५ अप्रैल २०१७ को १६/८३८, इन्दिरा नगर लखनऊ में यज्ञ हुआ जिसमें श्रीमती सरला आर्य, श्रीमती शशि त्रिपाठी, रश्मि त्रिपाठी, अमित वीर, मलयज, कु.अनूषा इत्यादि परिवार के समस्त सदस्यों ने सोत्साह भाग लिया तथा आपके सुन्दर स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की कामनाएँ व्यक्त कीं। इस अवसर पर अनेक गण्यमान व्यक्तियों के शुभकामना संदेश प्राप्त हुए जिनमें सर्वश्री पाल प्रवीण, ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, जय प्रकाश शुक्ल आशियाना, चन्द्र प्रकाश शुक्ल एवं प्रेम प्रकाश शुक्ल शास्त्री (हरिद्वार), गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' एवं श्री अमृत खरे के नाम उल्लेखनीय हैं। डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने सभी शुभाकांक्षा व्यक्त करने वालों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

### नवीन गृह प्रवेश यज्ञ

१६ मार्च, २०१७। १८/१२, आसरा अपार्टमेंट, वृन्दावन योजना लखनऊ में नवनिर्मित गृह में प्रवेश के उपलक्ष्य में वैदिक यज्ञ का आयोजन श्री अनिल कुमार सचान (शाखा प्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा) द्वारा किया गया। यज्ञ के आयोजन एवं सुव्यवस्था में श्री सौरभ एवं अमित तिवारी का विशेष योगदान रहा। श्रीमती सुनीता सचान एवं श्रीमती आशा ने यज्ञ में भाग लिया तथा आहुतियाँ अर्पित कीं। डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ।

### भाषा प्रतिष्ठापन का आठवां वार्षिक उत्सव

भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन राष्ट्रीय परिषद (उ.प्र.) का आठवां वार्षिकोत्सव बीरबल साहनी पुरावनस्पति विज्ञान संस्थान, लखनऊ के सहयोग से संस्थान के सभागार में दि. २६ मार्च को सम्पन्न हुआ। इसके मुख्य अतिथि वरिष्ठ पत्रकार श्री के.विक्रम राव थे और अध्यक्षता श्री महेशचन्द्र द्विवेदी ने की। डॉ.उषा चौधरी साहित्यकार एवं डॉ.सुनील वाजपेयी, निदेशक पुरावनस्पति विज्ञान संस्थान की विशिष्ट उपस्थिति रही। इस अवसर पर 'महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर हिन्दी में शिक्षण- वर्तमान एवं भविष्य' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें मंचस्थ विद्वानों के अतिरिक्त विभिन्न प्रान्तों से पधारे विद्वानों, परिषद के राष्ट्रीय महासचिव डॉ.मोहनलाल अग्रवाल, डॉ.उषा सिन्हा आदि ने महत्वपूर्ण सुझाव दिये। परिषद द्वारा प्रकाशित स्मारिका का लोकार्पण भी हुआ।

कोचीन से पधारे डॉ.के.वनजा एवं डॉ.एन.मोहनन, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के डा.रामपाल वर्मा एवं साहित्यकार डॉ.विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' को उनके हिन्दी में लेखन हेतु सम्मानित किया गया। परिषद ने विभिन्न विद्यालयों के छात्रों की सुलेख, अन्त्याक्षरी, वाद-विवाद एवं निबंध प्रतियोगितायें आयोजित की थीं जिनमें क्रमशः मुस्कान सोनी, अनुष्का दीक्षित, अंशिका चतुर्वेदी, सुप्रिया राय एवं आस्था दुबे ने प्रथम स्थान प्राप्त किया था। विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। श्री राजेश शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। *(महेशचन्द्र द्विवेदी)*

### बघेल ने तोड़ा अंधविश्वास

पशुधन एवं सिंचाई मंत्री प्रो.एस.पी.सिंह बघेल ने कालीदास मार्ग स्थित सरकारी बंगले में गृहप्रवेश किया। मुख्यमंत्री आवास के ठीक बगल वाले इस बंगले में उन्होंने विधिवत हवन-पूजन कराया। कई वजहों से इस बंगले को मनहूस मान लिया गया था, लेकिन प्रो.बघेल ने कहा कि 'इतना बड़ा बंगला खाली तो नहीं रह सकता है। हमलोग समाज के रोल मॉडल हैं और मैं इसमें रहकर अंधविश्वास तोड़ना चाहता हूँ।

इस बंगले में रह चुके हैं ये लोग- पूर्व मुख्य सचिव नीरा यादव(घोटाले में जेल जाना पड़ा), प्रमुख सचिव प्रदीप शुक्ला(एनआरएचएम घोटाले में फंसे, जेल गए), बाबूसिंह कुशवाहा(मंत्री पद से बेदखल हुए, सीबीआई जांच में फंसे), वकार शाह (मंत्री बनकर आए, बीमार पड़े, अबतक कोमा में), जावेद आब्दी(प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के चेयरमैन बने, बंगले में आए और पद से हटा दिए गए।

## उत्तराखण्ड-समाचार

### जगदीश, विनय और मनुदेव पुरस्कृत

हरिद्वार। माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास की ओर से आर्य वानप्रस्थ आश्रम में स्वामी आत्मबोध सरस्वती की दीक्षा जयंती पर अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर वैदिक विचारधारा के क्षेत्र में असाधारण योगदान देने वाले तीन विद्वानों को सम्मानित किया गया।

महात्मा आर्यभिक्षु

समारोह में पं.जगदीश चन्द्र वसु को स्वामी धर्मानंद विद्यामार्तण्ड आर्यभिक्षु पुरस्कार, विनय आर्य को स्वामी आत्म बोध कर्मवीर पुरस्कार और आचार्य मनुदेव को अखिलानंद आर्यभिक्षु पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के प्रधान देवराज आर्य, आश्रम के प्रधान आचार्य रामकृष्ण, प्रो.त्रिलोक चन्द्र, रुक्मिणी आर्या, गिरधाारीलाल चंदवानी, आचार्य शिव कुमार शास्त्री, जगदीश और करुणा आर्या ने तीनों विद्वानों को शॉल ओढ़ाकर तथा अभिनन्दन पत्र देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक यज्ञ के साथ प्रारंभ किया गया। सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा के लिए स्नेहलता, शोभा रानी, नीलिमा भगत, योगेश आर्य, विमला यति, संतोष कुमारी, अनिल प्रकाश अग्रवाल, रामचंद्र मुनि, कुसुम गर्ग, ब्रह्मानंद, बृजमोहन, माधुरी श्रीवास्तव को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के प्रधान देवराज आर्य ने कहा कि महात्मा आर्यभिक्षु का जीवन सत्यार्थ प्रकाश के लिए समर्पित था। इस अवसर पर राममूर्ति गुप्ता, जे.पी.अग्रवाल, करुणा, जगदीश विमानी, जगदीश पहवा ने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन श्री देवराज आर्य ने किया।

*(चन्द्रप्रकाश शुक्ल, हरिद्वार)*

## हरदोई-समाचार

### आर्य समाज गोनी का वार्षिकोत्सव

हरदोई जनपद की संडीला तहसील के सुदूर अंचल में स्थित आर्य समाज गोनी का वार्षिक उत्सव समारोह पूर्वक वरिष्ठ आर्यनेता श्री विमल कुमार आर्य एडवोकेट की अध्यक्षता में २८ से ३० मार्च २०१७ को मनाया गया। प्रतिदिन यज्ञ, भजनोपदेश एवं प्रवचन की धारा प्रवाहित होती रही। ग्रामीण जनता विशेष कर लाभान्वित हुई। उत्सव में पार्श्ववर्ती आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। गढ़ी नेवादा, गौर, छिपुलिहा, चतुरखेड़ा, मालपुर, गोंडवा, जनगाँव से आर्यजन कार्यक्रम सुनने हेतु आते रहे। हरदोई से वंशीधर शुक्ल, प्रकाश नारायण अवस्थी, सुश्री सविता एवं संतोष अस्थाना इत्यादि गण्यमान व्यक्तियों का पदार्पण हुआ। संडीला आर्य समाज के प्रतिनिधि गण- डॉ. सत्यप्रकाश जी के नेतृत्व में उत्सव में शामिल हुए। उत्सव में महिला सम्मेलन विशेष रूप से प्रभावशाली रहा, जिसकी अध्यक्षता सुश्री सुनीता सिंह ने की।

उत्सव में प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री युगलकिशोर आर्य एवं श्री हरिश्चन्द्र जी के उपदेशों का विशेष प्रभाव पड़ा।

## राजस्थान-समाचार

### भारतीय नववर्ष एवं आर्य समाज स्थापना दिवस कार्ड का विमोचन

कोटा, २३ मार्च। आर्य समाज जिला सभा द्वारा संक्षिप्त कार्यक्रम सर्किट हाउस में राजस्थान के लोकायुक्त न्यायमूर्ति सज्जनसिंह कोठारी के मुख्य आतिथ्य में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में आर्य समाज जिला सभा द्वारा तैयार किया गया नव संवत्सर भारतीय नववर्ष व आर्य समाज स्थापना दिवस के मल्टीकलर कार्ड का विमोचन करते हुए अपने वक्तव्य में महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए मा.श्री कोठारी ने कहा कि महर्षि दयानन्द अपने वेदभाष्य एवं सामाजिक सुधार के कार्यों से ही महापुरुषों की श्रेणी में आ जाते हैं। लेकिन मुम्बई में १८७५ में आर्य समाज की स्थापना कर उन्होंने अपने वाले समय के लिए एक ऐसा सांगठनिक ढांचा तैयार कर गये जिससे उनके सम्मान में मन स्वतः नतमस्तक हो जाता है। आर्य समाज के छठे नियम से दयानन्द जी की संसार के प्रति कल्याण की भावना का ज्ञान होता है। अतः महर्षि दयानन्द की यह विचारधारा विश्व के लिए प्रेरणादायक है। वर्तमान समय में देशभर में फैला आर्य समाज सामाजिक सुधार के कार्यों को गति प्रदान कर रहा है।

आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा की अगुवाई में डी.ए.वी. की प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम, धर्म शिक्षक शोभाराम आर्य, समाजसेवी डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, आर्य समाज रामपुरा के प्रधान कैलाश बाहेती, तिलक नगर के प्रधान ओम प्रकाश तापड़िया, भीमगंजमण्डी के प्रधान प्रेमनाथ कौशल, खेड़ारसूल पुर के प्रधान रामनारायण, तलवण्डी के प्रधान आर.सी.आर्य, रेलवे कालोनी के मंत्री करण सिंह आर्य के अतिरिक्त वंशीलाल, रामकल्याण, उदय प्रकाश, वेदमित्र वैदिक, राधावल्लभ आदि सर्किट हाउस पहुंचे। कार्यक्रम की अध्यक्षता अर्जुनदेव चड्ढा ने की तथा आभार कैलाश बाहेती ने व्यक्त किया।

## लखनऊ-समाचार

### 'रमा सतसई' का विमोचन समारोह

१४.०४.१७। वरिष्ठ कवयित्री श्रीमती रामा आर्य 'रमा' की नव प्रकाशित काव्यकृति 'रमा सतसई' का विमोचन समारोह, प्रेस क्लब, हजरतगंज में सायं ४ से ६ बजे तक सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता जाने माने साहित्यकार पं.हरि ओम शर्मा 'हरि' ने की तथा संचालन कथाकार कवि श्रीशरत्न पाण्डेय ने किया। समारोह के संयोजक थे प्रत्यूषरत्न पाण्डेय। श्री अशोक कुमार पाण्डेय 'अशोक' सम्पादक 'ब्रज कुमुदेश' ने 'रमा सतसई' का साहित्यिक परिचय प्रस्तुत किया तथा प्रो.नेत्रपाल सिंह ने पुस्तक की समीक्षा में विचार प्रकट किये। कार्यक्रम में पीयूष रत्न पाण्डेय, वरिष्ठ भाषा अधिकारी, भाभा आणविक केन्द्र मुम्बई, टी. पी.हवेलिया, महेश पाण्डेय 'महेश', श्री नीरज बोरा ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये तथा रमा जी को साहित्यिक प्रयोजनमूलक शानदार लेखन के लिए बधाई दी। श्रीमती गीता श्रीवास्तव ने स्वागत भाषण दिया। वक्ताओं का यह विचार था कि रमा सतसई' से हिन्दी की सतसई काव्य परम्परा को मजबूत आधार मिला है तथा हिन्दी कविता की भाव सम्पदा समृद्ध हुई है। डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने इस भाव को इस तरह अपने दोहों में व्यक्त किया-

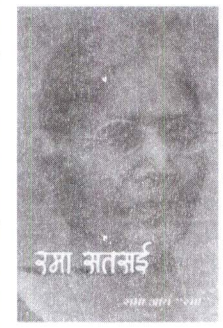


अभिव्यंजन सामर्थ्य का यह प्रत्यक्ष सबूत।
रमा सतसई से हुई परम्परा मजबूत।।

इस अवसर पर श्री ज्ञानन्द दत्त त्रिपाठी, श्रीराम शुक्ल, गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', श्री विश्राम सागर पाण्डेय-अध्यक्ष, सागर संस्कृति सांस्कृतिक संस्था, कवयित्री आभा मिश्रा सरीखे साहित्यिकों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

### विचारों की शक्ति सर्वोच्च
### 'आइडियाज दैट इम्पावर'

१२.०४.१७। ७ से १६ अप्रैल तक चलने वाले पुस्तक मेले के अवसर पर मोती महल लॉन में साहित्य-संस्कृति से जुड़े हुए कार्यक्रमों के आयोजनों के लिए बनाये गए मनोहर पंडाल में- लोकमंगल की साधना में संलग्न पं.हरिओम शर्मा 'हरि' की महत्त्वपूर्ण अंग्रेजी पुस्तक 'आइडियाज दैट इम्पावर' का विमोचन- विश्वविख्यात शिक्षाविद् श्री जगदीश गाँधी द्वारा किया गया। समारोह में श्री जगदीश गाँधी को 'शान-ए-अवध' सम्मान से नवाजा गया। इस अवसर पर उमेश चन्द्र तिवारी, आई.ए.एस., टी.पी.हवेलिया, मनोज तोमर, शीला पाण्डेय, ने पं.हरिओम शर्मा 'हरि' की रचनाओं की मौलिकता एवं महत्ता तथा शान-ए-अवध जगदीश गाँधी के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का शुभारम्भ माता-पिता के वंदन गीत से हुआ। दीप-ज्योति का प्रज्ज्वलन किया गया। संचालन श्री प्रत्यूष रत्न पाण्डेय ने किया तथा अध्यक्षता प्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती रामा आर्य 'रमा' ने की। डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने कविता के माध्यम से कहा-

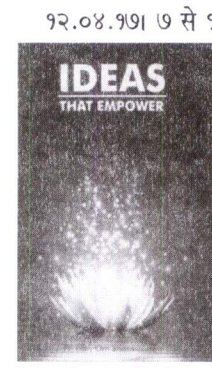


साधनामय कार्यपथ पर बढ़ रहे हैं,
भावनामय धर्मरथ पर चढ़ रहे हैं,
धन्य है हरिओम शर्मा 'हरि' कि जो-
माँ भारती की दिव्य प्रतिमा गढ़ रहे हैं।

# सरयूबाग अयोध्या में बनेगा ऋग्वेदादिभाष्य स्मारक

## कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य ने मो.इरफान अंसारी के साथ किया भूमि क्रय का इकरारनामा

### दान दाताओं के लिए पुण्यार्जन का सुनहरा अवसर


आनन्द कुमार आर्य

स्वामी दयानन्द सरस्वती वेद पढ़ने का अधिकार, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा स्त्रियों आदि को देते हैं। इस सम्बन्ध में यजुर्वेद का मंत्र 'यथेमां वाचं कल्याणीं आवदानि जनेभ्यः' का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। चारों वेद के एकमात्र अंग्रेजी अनुवादक वैज्ञानिक संन्यासी स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती जी कहते हैं- वेद मानव-मात्र के लिए हैं। जिन्हें 'अ', 'उ' और 'म्' तक बोलने या समझने अथवा सुनने की क्षमता परमात्मा ने दी है उन सबके लिए वेद का ज्ञान है। स्वामी दयानन्द के समस्त सिद्धान्तों में वेद सर्वोपरि है। पं.युधिष्ठिर मीमांसक का कहना है कि "स्वामी दयानन्द के समस्त साहित्य में या कार्यों में 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' तथा वेद भाष्य का कार्य सर्वश्रेष्ठ है। यहाँ तक कि 'सत्यार्थ प्रकाश' से भी अधिक महत्व वेद भाष्य का है।"

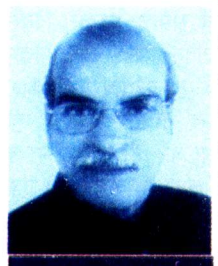

स्वामी दयानन्द भी अपने आर्य समाज के दस नियमों में कहते हैं-'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।'

पं.युधिष्ठिर मीमांसक जी ने अपने १९४९ ई. में प्रकाशित 'ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास' में पृ.९६ में लिखा-'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका ग्रन्थ की रचना की। यह भूमिका चारों वेदों के करिष्यमाण भाष्यों की है, यह इसके नाम से प्रगट है। यजुर्वेद भाष्य में ऋषि ने लिखा है-"और सब विषय भूमिका में प्रकट कर दिया, यहाँ देख लेना। क्योंकि उक्त भूमिका चारों वेदों की एक ही है।"(यजुर्वेद भाष्य पृ.८) ऋषि ने जिस समय भूमिका का प्रारम्भ किया उस समय वे अयोध्या नगर में विराजमान थे। पं.देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय द्वारा संग्रहीत जीवन चरित्र में पृ.३७५ पर लिखा है-

"भाद्र कृष्ण १४ सं.१९३३वि. अर्थात् १८ अगस्त सन् १८७६ को स्वामी जी अयोध्या पहुँचकर सरयूबाग में चौधरी गुरुचरण लाल के मन्दिर में उतरे। अयोध्या में भाद्र शुक्ल प्रतिपदा सं.१९३३ अर्थात् २० अगस्त सन् १९७६ को ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का लिखना प्रारम्भ हुआ।" इसी प्रकार आर्य समाज नयाबांस दिल्ली से प्रकाशित पं.लेखराम कृत महर्षि दयानन्द जीवन चरित्र में भी यही लिखा है। ऋषि ने मार्गशीर्ष शु.१५ सं. १९३३वि. को स्वीय वेदभाष्य के प्रचारार्थ एक विज्ञापन प्रकाशित किया था-'सम्वत् १९३३ वि. मार्गशीर्ष शुक्ला पूर्णमासी (१ दिसम्बर, १८७६) पर्यन्त दश हजार श्लोकों (का) प्रमाण भाष्य बन गया है।' इस प्रकार स्वामी जी ने २० अगस्त १८७६ से लिखना प्रारम्भ किया और १ दिसम्बर १८७६ को ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पूरी की।


सज्जनसिंह कोठारी

आर्य समाज टाण्डा-अम्बेडकरनगर का शताब्दोत्तर रजत जयन्ती समारोह १० नवम्बर से १४ नवम्बर २०१६ को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाया गया। इस समारोह के 'लोगो' में अयोध्या का वर्णन देखकर राजस्थान के माननीय लोकायुक्त आर्य न्यायमूर्ति श्री सज्जन सिंह कोठारी सपत्नीक सरयूबाग गये और उन्होंने टाण्डा आकर उस स्थान को खरीदकर स्मारक बनाने की बात कही।

सरयूबाग स्थित गुरुचरण लाल के वंशज रहते हैं। उनके मन्दिर के ठीक सामने संयोग से भूमि विक्रय हेतु आबादी (धारा १४३) के अन्तर्गत मो. इरफान अंसारी की है। इस भूमि के पास एक गर्ल्स डिग्री कॉलेज तथा दो इण्टर कालेज संचालित हैं। मेडिकल कालेज का बनना प्रस्तावित है। यह परिक्रमा पथ के साथ संलग्न स्थित है। श्री अंसारी जी के साथ श्री आनन्द कुमार आर्य, पं. दीना नाथ शास्त्री(अमेठी), डॉ.नागेन्द्र कुमार शास्त्री (गुरुकुल अयोध्या), श्री हिमांशु त्रिपाठी (प्रधान, आर्य समाज फैजाबाद), परशुराम पाण्डेय (सरयूबाग, अयोध्या), आनन्द कुमार चौधरी एडवोकेट(लखनऊ) आदि ने निगोशिएसन के उपरान्त तीस हजार (३०,०००) वर्गफुट जमीन क्रय हेतु मूल्य का निर्धारण किया जो वास्तविक मूल्य से काफी कम पर मिल रही है। १ करोड़ १२ लाख भूमि का मूल्य+रजिस्ट्री तथा बाउण्ड्रीवाल एवं कार्यालय के निर्माणार्थ प्रथम दृष्टया डेढ़ करोड़ रुपये की आवश्यकता है।


दीना नाथ शास्त्री

आर्यजनों! सरयूबाग अयोध्या की यह भूमि ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य की जन्म भूमि है। ऋषि से सम्बन्धित समस्त स्थलों से अधिक महत्व की है। ज जाने अभी तक किसी आर्य मनीषी की दृष्टि यहाँ क्यों नहीं पड़ी? यदि इस समय क्रय नहीं किया जाता है तो भविष्य में भूमि नहीं मिल पायेगी तथा आने वाला इतिहास वर्तमान सभी आर्यों को माफ नहीं करेगा।

इस भूमि के क्रय हेतु मो.इरफान अंसारी के साथ गुरुकुल अयोध्या में ऋषि दयानन्द जन्म दिवस के अवसर पर दि.११ फरवरी, २०१७ को एग्रीमेंट आनन्द कुमार आर्य ने एक लाख एक हजार रुपये देकर पं. दीनानाथ शास्त्री, नागेन्द्र शास्त्री, हिमांशु त्रिपाठी एडवोकेट, सत्यप्रकाश आर्य भजनोपदेशक(बाराबंकी) की उपस्थिति में कराया है।

अस्तु, यह जहाँ मर्यादा पुरुषोत्तम आर्य राम की जन्मभूमि है वहीं सरयूबाग अयोध्या ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य की जन्मभूमि है। आइए, हम सभी देश विदेश के दानी आर्यजन इस महती कार्य में अधिक से अधिक 'शत हस्त समाहर सहस्र हस्त संकिर' की पवित्र भावना से दान देकर १.५ करोड़ की प्रारम्भिक राशि की यथाशीघ्र पूर्ति करें और यश के भागी बनें।

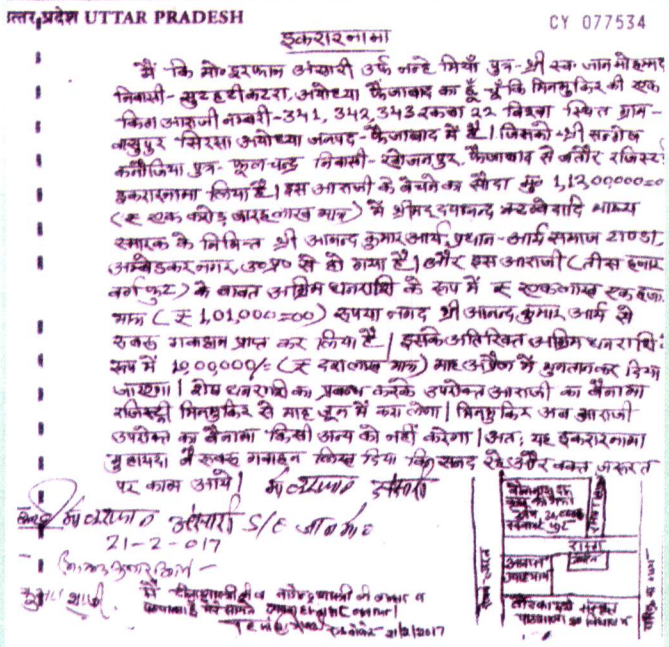


भारतीय गैर न्यायिक
एक सौ रुपये Rs. 100 रु. 100 ONE HUNDRED RUPEES
भारत INDIA
INDIA NON JUDICIAL
22 JUN 2016
उत्तर प्रदेश UTTAR PRADESH CY 077534

इकरारनामा

मैं कि मो० इरफान अंसारी उर्फ नन्हे मियाँ पुत्र-श्री स्व० जान मोहम्मद निवासी- सुरहटीकटरा, अयोध्या फैजाबाद का हूँ चूँकि मिनमुकिर की एक किता आराजी नम्बरी-341, 342, 343 रकबा 22 बिस्वा स्थित ग्राम- [illegible] सिरसा अयोध्या जनपद-फैजाबाद में है। जिसको श्री सन्तोष कनौजिया पुत्र- फूलचन्द्र निवासी- रोजनपुर, फैजाबाद से बतौर रजिस्ट्री इकरारनामा लिया है। इस आराजी के बेचने का सौदा मु० 1,12,00000=00 (₹ एक करोड़ बारह लाख मात्र) में श्रीमद् दयानन्द ऋग्वेदादि भाष्य स्मारक के निमित्त श्री आनन्द कुमार आर्य, प्रधान-आर्य समाज टाण्डा, अम्बेडकरनगर, उ०प्र० से हो गया है। और इस आराजी (तीस हजार वर्ग फुट) के बाबत अग्रिम धनराशि के रूप में ₹ एक लाख एक हजार मात्र (₹ 1,01,000=00) रुपया नगद श्री आनन्द कुमार आर्य से रूबरू गवाहान प्राप्त कर लिया है। इसके अतिरिक्त अग्रिम धनराशि के रूप में 10,00,000/= (₹ दस लाख मात्र) माह अप्रैल में भुगतान कर दिया जायेगा। शेष धनराशि का प्रबन्ध करके उपरोक्त आराजी का बैनामा रजिस्ट्री मिनमुकिर से माह जून में करा लेगा। मिनमुकिर अब आराजी उपरोक्त का बैनामा किसी अन्य को नहीं करेगा। अतः यह इकरारनामा मुआयदा मैं रूबरू गवाहान लिख दिया कि सनद रहे और वक्त जरूरत पर काम आये।

21-2-017

**सम्पर्क सूत्र :**
आनन्द कुमार आर्य, प्रबन्धक, डी.ए.वी.एकेडमी, टाण्डा, अम्बेडकरनगर
चलभाष-9331866618, ई-मेल-anandkumararya75@gmail.com

**प्रेरणा :**
स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्वामी आर्यवेश (दिल्ली), दीनदयाल गुप्त (डालर, कोलकाता), सुरेश चन्द्र गुप्त (अहमदाबाद), मिठाई लाल सिंह (मुम्बई), अरुण अब्रोल (मुम्बई), अशोक आर्य (उदयपुर), प्रदीप आर्य (अलवर), ठा.विक्रम सिंह (दिल्ली), डॉ.विद्या मित्र (दिल्ली), आनन्द चौहान (एमिटी यूनि. दिल्ली), देवेन्द्र पाल वर्मा (आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र.), डॉ.वेद प्रताप वैदिक (दिल्ली), डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई), वेद प्रकाश श्रोत्रिय (दिल्ली), डॉ.प्रशस्यमित्र शास्त्री (रायबरेली), डॉ.ज्वलन्त कुमार शास्त्री (अमेठी), पं.विद्याप्रसाद मिश्र (नई दिल्ली), डॉ.प्रियम्वदा (नजीबाबाद), सत्य प्रकाश आर्य भजनोपदेशक (बाराबंकी), डॉ.नागेन्द्र शास्त्री (गुरुकुल अयोध्या), हिमांशु त्रिपाठी एडवोकेट (फैजाबाद), आनन्द कुमार चौधरी एडवोकेट (लखनऊ), प्रेमशंकर शुक्ल वानप्रस्थी (लखनऊ), विजय प्रकाश मिश्र (गोसाईगंज अम्बेडकरनगर), पं.दीनानाथ शास्त्री (दायाद शिष्य-स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती) आदि-आदि।

**नोट-न्यास गठन की प्रक्रिया जारी है!**

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
**डॉ० वेद प्रकाश आर्य**
कार्यालय-19/838, प्रथम तल, रिंगरोड, इन्दिरानगर, लखनऊ-226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
**आलोक वीर आर्य**
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
**अमित वीर त्रिपाठी**
: 9795445800

संवाद प्रमुख
**गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'**
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
**श्रीमती सरला आर्य**
: 9450500138

विशेष कार्याधिकारी
**श्रीमती निमिषा वाजपेयी**
: 9198080000

नवोन्मेष
**कृष्णा जी. प्रिंटेक**

E-mail - aryalokvarta@gmail.com

**सहयोग राशि**

| | | |
|---|---|---|
| सामान्य सदस्य | - | 100 रु. वार्षिक |
| होता सदस्य | - | 1,500 रु. वार्षिक |
| संरक्षक | - | 15,000 रु. |
| प्रतिष्ठापक | - | 50,000 रु. |

सहयोग राशि निम्न बैंकों की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-

(1) बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक - आर्य लोक वार्ता
खाता सं. - 46900 1000 00651
खाते का प्रकार-बचत खाता

(2) बैंक-इलाहाबाद बैंक, ए-869, इन्दिरा नगर, लखनऊ।
IFSC - ALLAO211122
खाता धारक - आर्य लोक वार्ता
खाता सं. - 5022 3541 717
खाते का प्रकार-बचत खाता

**प्रतिष्ठापक**
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

**संरक्षक**
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा
श्रीमती शालिनी कुमार, लखनऊ
डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक', लखनऊ
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ

**परामर्श एवं सहयोग**
श्रीमती प्रियंका शर्मा, लखनऊ
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
श्रीमती रमा आर्य 'रमा' लखनऊ
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

**सलाहकार**
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-2, हिमांशु सदन, 5-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क / 234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

**ग्राम ग्राम में नगर नगर में, 'आर्य्य लोक वार्ता घर-घर में**